प्रकाशक की ओर से

प्रस्तुत पुस्तक ससार के महान-आत्माओं के अमर वाक्यों का सक्षिप्त सग्रह है, जिसमें श्रीकृष्ण, बुद्ध, ईसा, मोहम्मद, मनु, व्यास, चाणक्य, शकराचार्य, तुलसीदास, कालीदास, रामतीर्थ, विवेकानन्द, दयानन्द, तिलक, गाधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, आचार्य ध्रुव, मीराबाई, लाजपतराय, जवाहरलाल नेहरू, सरोजनी नायडू, सुकरात, सेखसादी, लुक़मान, शेक्सपियर, टाल्सटॉय, कार्लमार्क्स, मैक्सनी, मेजनी, मौलियर, एन्ड्रूयुज, रस्किन, नैपोलियन, जानस्टुअर्टमिल, गेरीबाल्डी, इब्राहीम-लिंकन, गेटे, रूसो, लोगफैलो, हुआनसाँग, एमर्सन, गोल्डस्मिथ, गोर्की, किंगस्ले, आदि अनेक महापुरुषों ने अपने निजी जीवन के अनुभवों से संसार के कल्याण के वास्ते समय-समय पर कहा है।

आशा है कि हिन्दी-प्रेमी इन महान-आत्माओं के अमर-वाक्यों को अपनाकर हमारे उद्योग को सफल करेंगे।

—*शंकरलाल गुप्त 'विन्दु'*

वर्त्तमान-साहित्य-मण्डल, दिल्ली
की
अन्य पुस्तकें

—:*०*:—

स्त्रीपयोगी:—

राजपूतानियां

लेखक:—जगदीशप्रसाद माथुर 'दीपक'

मूल्य १)

एतिहासिक:—

दिल्ली की अन्तिम ज्योति

लेखक:—ख्वाजा हसननिजामी साहब

मूल्य २)

राजनीति सम्बन्धी:—

युद्ध

लेखक:—शंकरलाल गुप्त 'विन्दु'

मूल्य १)

ललित-साहित्य सम्बन्धी:—

हमारी करुण कहानियां

लेखक:—श्री ब्रह्मदत्त शर्मा

मूल्य १॥)

दार्शनिक या आत्म चरित्र:—

मेरी आत्म कहानी

लेखक:—टाल्सटॉय

मूल्य १।)

प्रेमोपहार—

अमर-वाणी

दया और प्रेम—इन्हीं दो शब्दों में धर्म के सारे तत्त्व निहित हैं।

—भगवान बुद्ध।

अमर—वाणी
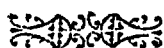
सफलता सरल नहीं है। जब तुम घाटी में खड़े हो, तो एका-एक कूद कर पर्वत के शिखर पर आसीन नहीं हो सकते।
—एलबर्ट ह्यूबर्ड।

* *

यदि तुम अपने प्रस्तुत कार्य से प्रेम करने में असमर्थ हो, तो इसे तुरन्त त्याग करो। इस में अधिक समय नष्ट करना उचित नहीं है।
—मि० ड्यूक।

* *

प्रत्येक मनुष्य अपनी क़ीमत रखता है।

—सर राबर्ट पूल।

* *

मित्रता का मूल्य मित्रता ही है, एक मनुष्य दूसरे पर हकूमत तो कर सक्ता है, मगर मन पर अधिकार नहीं कर सकता, जब तक अपना मन उसे समर्पित न कर दे।

—विशप विल्सन।

* *

हँसो, देखो संसार तुम्हारे साथ हँसता है। रोओ, तुम अकेले बैठ कर रोते हो। —एलर हीलर विलकाक्स

* *

संसार में किसी व्यवसाय से इतना कम लाभ नहीं होता, जितना लाखों का पोछा करने से।

—डीज़ेन रेशन।

* *

वे लोग, जो संसार की प्रत्येक वस्तु मे अवगुण ही देखा करते हैं, उन्नति की प्रगति में सदा पीछे रहते हैं। जिन लोगों ने आज तक सफलता प्राप्त की है, वे कभी ईर्ष्या तथा द्वेष के आवेश मे आकर बड़-बड़ाने वाले नहीं थे। —विशाप फेलोज़

* *

जो मनुष्य कार्य में अपने को भूल जाता है, उसे ही सर्वोत्तम सफलता प्राप्त हो सकती है। —एलबर्ट ह्यूबर्ड

पतिव्रता स्त्री में ईश्वर का सम्पूर्ण वैभव दीख पड़ता है।
—हर्मिस

* *

पराजय ही उच्च शिक्षा है, जिन्हें उत्कर्ष प्राप्ति की इच्छा हो, वे सब से प्रथम ऐसे कार्य करें जिन से पराजय का मूल्य ज्ञात हो सके। क्योंकि पराजय ही उन्नति का उच्च सोपान है।
—वेण्डेल फिलिप्स

* *

सुख में हमारे मित्र हमको, और मुसीबत में हम अपने मित्रों को पहचानते हैं।
—चटरटन कालन्स

* *

परमात्मा पूजा का नहीं प्रेम का भूका है।
—स्वा० दयानन्द

* *

क्या आप जीवन को प्यार करते हैं? यदि करते हैं, तो समय का अपव्यय क्यों करते हैं? क्या आप को नहीं मालूम कि उसी के द्वारा आप के जीवन का गठन हुआ करता है
—फ्रैंकलिन।

* *

वह क्या वस्तु है, जो साधारण मकान को आनन्द गृह में बदल देती है ?—प्रेम। —चासर।

* *

मनुष्य अपने अभिन्न मित्र को स्वयं से निम्न श्रेणी का पाकर प्रसन्न होते हैं। —चेस्टर फील्ड।

* *

तुम्हें जो वस्तु बुरी प्रतीत हो, उसका विचार तक तुम मत करो। दुष्ट विचार ही मनुष्य को दुष्ट कर्म की ओर ले जाता है। —उपनिषद्।

* *

न्याय से बढ़कर कोई रक्षक नहीं। विचार से बढ़कर कोई राजा नहीं, पदार्थ से बढ़कर कोई खड्ग नहीं, और सत्य से बढ़कर कोई सन्धि नहीं। —सुकरात।

* *

प्रेम कभी नष्ट नहीं होता, उसके पवित्र चिंगारे सदैव प्रकाशित रहते हैं। वह स्वर्ग से आता है, और स्वर्ग को चला जाता है। —सौदे।

* *

अगर संसार में तीन करोड़ ईसा, मुहम्मद, बुद्ध या राम जन्म लें, तो भी तुम्हारा उद्धार नहीं हो सकता। जब

तक तुम स्वयं अपने अज्ञान को दूर करने के लिये कटिबद्ध नहीं होते। तब तक कोई तुम्हारा उद्धार नहीं कर सकता, इसलिये दूसरों का भरोसा मत करो। —रामतीर्थ।

* *

विलास प्रियता महापाप है। कर्तव्य-पथ का सदा ध्यान रक्खो, चाहे सुअवसर हो, अथवा कुअवसर।

—अकबर।

* *

ज्ञान के ठण्डे प्रकाश मे प्रेम की बूटी कभी नहीं उग सकती। —कान्ट।

* *

कड़ी चोटों के स्कूल मे सच्ची और वास्तविक शिक्षा जीवन के बहुमूल्य पाठ पढ़ाती हैं, और तुम्हें अपनी परिस्थितियों के अनुसार चलने के योग्य बनाती है।

—एलबर्ट ह्यूबर्ड।

* *

परिश्रम की सभी आदतें बहुत अच्छी हैं, परन्तु मनन करने के परिश्रम की आदत अत्यन्त लाभ दायक है।

—बोल्टन हाल।

* *

अपने कार्य से प्रेम करना सीखो, इसमे विलम्ब करना ठीक नही। —जेम्स वी० ड्यूक।

* *

यदि हिन्दू-धर्म को जीवित रखना है, तो अछूतपन को मिटाना ही पड़ेगा। —महात्मा गान्धी।

* *

भीरू लोग अपनी मृत्यु के पहिले भी अनेक बार मरते हैं, पर वीर पुरुष मृत्यु का एक ही बार आस्वादन करते हैं।
—शेक्स पियर।

* *

विद्वत्ता से मैंने यही लाभ उठाया, कि मुझे अपनी मूर्खता का ज्ञान हो गया। —लुकमान।

* *

इच्छा को जीत कर शान्ति लाभ करना। सब जीवों पर दया करना यही सब धर्मों का मूल है। —बुद्ध।

* *

परमेश्वर के प्यारे वे हैं, जो उसकी सृष्टी से प्यार करते हैं। —आक्सर वाइल्ड

* *

यह हँसी की बात नहीं है, जीवन का सत्य है, मनुष्य मूर्ख है, यदि अपना नुक़सान देख कर रोता है। नुक़सान होने पर ही आत्मा को विचार करने और ईश्वर को पूजने का समय मिलता है और सत्य का दर्शन भी प्रभु तभी कराता है। —टालस्टाय।

* *

अपने शरीर को अन्तरीय समझो, जिसमें समुद्र की लहरें दिन रात टकराया करती हैं, परन्तु तब भी वह अपने स्थान को नहीं छोड़ता। इसी प्रकार जितनी आपत्तियाँ तुम पर आवे, सभी को वीरता के साथ सहन करो, और उनसे विचलित न हो। —मारकस अनटो नियस।

* *

मैं भारतवर्ष की आज़ादी और समस्त संसार के राज्य की ख़ातिर भी दलितों के हकों को बेच नहीं सकता।

—महात्मा गान्धी।

* *

प्रेम आँखों से नही, हृदय से दीखता है, यही कारण है कि प्रेम का देवता अन्धा बनाया गया है। —शेक्सपियर।

* *

बुद्धिमान् केवल वही हैं जो प्रेम में पागल हो चुके हैं।

—जोश बाकूक।

* *

भोग विलास और प्रेम में बड़ा अन्तर है।

—रामकृष्ण परमहँस।

*   *

प्रेम खिलौनों से खेलता है, क्यों कि प्रेम का देवता बालक है। —फोर्ड।

*   *

प्रेम अन्धा नेता है, जो उसके पीछे चलता है, रास्ता भूल जाता है। —कोलेशियर।

*   *

प्रेम नगरों में नही, देहातीं झौंपड़ियों में बसता है।

—गेटी।

*   *

यदि तुम को किसी स्थान पर मौत के पञ्जे से मुक्त होने की आशा नहीं है, तो उस स्थान पर हँसते हुए प्राण देने में ही वीरता है। —रावर्टसन।

*   *

जो शहद की मक्खी के डँक से डर कर शहद के छत्ते का त्याग करता है, वह शहद प्राप्त करने के योग्य नहीं है।

शेक्स पियर।

*   *

साहसी, कर्तव्यशील, और परिश्रमी व्यक्ति ही लक्ष्मी को प्राप्त कर सकते हैं। —ड्रायडन।

* *

संकट के समय धीरज धारण करना ही मानो आधी लड़ाई जीत लेना है। —प्लांटस।

* *

परमात्मा मुझे वह आँख दे, जो संसार के सकल पदार्थों को प्रेम की दृष्टि से देखे। —वेद।

*

किसी को भाग्य के भरोसे न रहना चाहिये। यह निश्चय समझना चाहिये कि गुण ही भाग्य है, वही युवा पुरुष संसार में आगे बढ़ सकता है, जो जानकारी रखता हैं, और जो अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये पूरा प्रयत्न करता है। —जार्ज मूर।

* *

प्रेम स्वर्ग का रास्ता है। —टालस्टाय।

* *

प्रेम मनुष्यत्तव का दूसरा नाम है —बुद्ध।

* *

इस सँसार में एक ही शिक्षा लेने की आवश्यक्ता है, और वह प्रेम की शिक्षा है। —स्वामी रामतीर्थ।

*　　　　*

घृणा राक्षसों की सम्पत्ति है, क्षमा मनुष्यत्तव का चिह्न है। परन्तु प्रेम देवताओं का स्वभाव है। —भर्तृहरि।

*　　　　*

प्रेम सँसार की ज्योति है। —ईसा मसीह।

*　　　　*

मेरी आज्ञा है कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो।

—कन्फयूशस।

*　　　　*

जल से शरीर पवित्र होता है, मन सत्य से, आत्मा धर्म और भक्ति से, बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है। —मनु।

*　　　　*

स्त्रियों के ऊपर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने वाली प्रत्येक कल्पना को अपने मस्तिष्क से बहिष्कृत करदो। उन से श्रेष्ठ कहलाने का तुम्हें कोई भी अधिकार नहीं है।

—मेजनी।

*　　　　*

जबतक आप स्वयं अपने आप को उपदेश न देंगे, तब

तक दूसरे बड़े २ उपदेशकों के उपदेश से भी आपको कुछ लाभ नहीं हो सकता। स्वयं अपने गुण व गुण की समालोचना करते हुए अपने चित्त को सदा शुद्ध प्रेम की ओर लाने की चेष्टा करें। —स्वामी रामतीर्थ।

*　　　　　　　　*

स्त्री और पुरुष कैंची के दो हिस्सों की तरह परस्पर जीवन को पूरा बनाते हैं। —बैंजमन फ्रैंकलिन।

*　　　　　　　　*

स्त्री अविकसित पुरुष नहीं, परन्तु इससे इधर ही कुछ है। उसे पुरुष के समान बनाना मधुर प्रेम की हत्या करना है, उसके अस्तित्व को मटिया मेट करना है। —टेनीसन।

*　　　　　　　　*

प्रेम मनुष्य की निर्बलता भी है और हथियार भी।

—नीशे।

*　　　　　　　　*

प्रेम पापियों को भी सुधार देता है। —कबीर।

*　　　　　　　　*

मैत्री आत्माओं के विवाह का नाम है —वाल्टेयर।

*　　　　　　　　*

दूसरों से प्रेम करना अपने आप से प्रेम करना है।

—इमर्सन।

* *

प्रेम की जिह्वा आँखों में है। —फिल्चर।

* *

दण्ड देने का अधिकार केवल उसी को है, जो प्रेम करता है। —रवीन्द्रनाथ टैगोर।

* *

जो प्रेम प्रकट न किया जाय, वह सबसे पवित्र है।

—कार लाइल।

* *

जो बारम्बार प्रेम करता है, वह प्रेम करना नहीं जानता।

—तुलसीदास।

* *

कोकिला आम्र-अमृत रस पीकर भी गर्व नहीं करती, किन्तु मूढ़-मेंढ़क नालियों का गन्दा पानी पीकर ही गर्जन करने लगता है। —रत्नावलि।

* *

स्त्रियों की उन्नति या आवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है। —अरस्तू।

मूर्खों की संगति आरम्भ में यदि हमें हंसा भी दे, तो अन्त मे वह हमें ग़मगीन बनाये बिना न रहेगी।

—गोल्ड स्मिथ।

*   *

मनुष्य की प्रत्येक महत्त्वाकांक्षा का अन्तिम लक्ष्य उस का देश, ईश्वर और सत्य होना चाहिये। —शेक्स पियर।

*   *

यदि मुझसे कोई भी पूछे, कि मद्य में और सड़े हुए दांतों में अधिक हानि-कारक कौन है? तो मैं निःशंकता-पूर्वक, प्रसन्न-चित्त से कहूँगा कि सड़े हुए दाँत अधिक नुक़सान करते है। —डाक्टर विलियम आँसलर।

*   *

आदर्श शिक्षा के बिना कोई राष्ट्र अपनी स्वाधीनता की रक्षा नहीं कर सकता। —श्रीमती ऐनीबीसेंट।

*   *

अस्थिर, अव्यवस्थित, और चंचल चित्त के पुरुष किसी भी महत्त्व कार्य को सम्पादन करने में समर्थ नहीं हुए।

—जार्ज इलियट।

*   *

सुन्दर वस्तु सदा के लिए प्रसन्नता की सामग्री है।

—कीट।

* *

इस समय तुम्हारा एक-एक मिनट बहुमूल्य है, अब से चालीस वर्ष पश्चात् तुम्हारे पूरे दिन भी शायद इतने कीमती न होंगे। —शेक्स पियर।

* *

तपस्या से मनो कामना पूर्ण होती है, वृद्धों की सेवा से बुद्धिमानी मिलती है, बहुत से मित्र करने से सुख प्राप्त होता है, और अपने धर्म पर दृढ़ रहने से स्वर्ग का द्वार खुल जाता है। —युधिष्ठिर।

* *

जो पुण्यात्मा को गाली देता है, वह वैसा ही है, जैसा कि आकाश पर थूक फेंकने वाला। थूक आकाश तक तो न पहुं-चेगा, परन्तु वह लौट कर उसी के शरीर पर पड़ेगा।

—महात्मा बुद्ध।

* *

अपनी पूरी कोशिश से बुराइयों से बचते रहना, और अच्छी बातों से लाभ उठाना, हमारे बस मे है। इसीं का नाम होशियारी है। —रस्किन।

सम्पत्तिशाली होकर स्वप्न मे भी घमण्ड नहीं करना चाहिये, जिस प्रकार बहते हुए पानी में वर्तन नहीं ठहर सकता वैसे ही धन दौलत भी ठहरने वाली नहीं है।

—गिरिधर दास।

*　　　　*

ज्यों २ मनुष्य बूढ़ा होता जाता है, उसे जिन्दगी से प्रेम और मृत्यु से भय होता जाता है। —गोल्ड स्मिथ।

*　　　　*

बुरी नारी से विवाह हो जाना इस संसार में सबसे बड़ा संकट है, जिससे परमात्मा संसार के पापी जनों को धमकाता और डराता है। —डी० एल० एय।

*　　　　*

जो व्यक्ति जितना अधिक सुसंस्कृत होता है, वह उतना ही अधिक दु:खी होता है —एण्टन चेखोफ।

*　　　　*

यदि लोग तुम्हारे कार्यों के लिए तुम्हारी प्रशंसा करें, तो कोई नुकसान नहीं। लेकिन, लोगों से प्रशंसा पाने के लिए काम करना निःस्सन्देह हानिकारक है। —टाल्सटाय।

*　　　　*

ईमान्दारी सबसे अच्छा गुण है, परन्तु जो मनुष्य इस

ध्येय पर काम करता है, वह ईमान्दार मनुष्य नहीं है,

—आर्च विषप ह्वाटले।

*　　　　*

सम्पत्ति की उत्पत्ति ही मनुष्य का उपजीवन, उसकी आवश्यकताओं की तृप्ति और उसकी शारीरिक, मानसिक तथा राजनैतिक उन्नति का साधन है, परन्तु जो सम्पत्ति अंत में मनुष्य के ही काम में आने वाली है, उसके उत्पन्न करने का मुख्य साधन मनुष्य ही है,

—मार्शल।

*　　　　*

स्त्री में प्रपंच का नाम नहीं। उसका चित्त सदा शांत रहता है। वह बहुत दृढ़ है, मगर सुकोमल, बहुत दाना है, मगर चुप रहने वाली।

—पोप।

*　　　　*

मैंने प्रायः देखा है कि जब स्त्रियां धार्मिक-सिद्धान्तों को ग्रहण कर लेती हैं, तो उनका विश्वास, उद्यम, भक्ति भाव, और परिश्रम पुरुषों से कही अधिक होता है।

—लूथर।

*　　　　*

काँटों भरी शाखा को फूल सुन्दर बना देते हैं, और ग़रीब से ग़रीब आदमी के घर को लज्जावती स्त्री स्वर्ग समान बना देती है।

—गोल्डस्मिथ।

*　　　　*

जो स्त्री पतिव्रता होगी, उसे अपने ऊपर अभिमान होगा

—लार्ड बेकन।

*　　　　*

नौकर से अपना भेद कहना क्या है, उसे नौकर से मालिक बना लेना है। —अरस्तू।

*　　　　*

सदाचार का पालन करने से मनुष्य को दीर्घायु, मन चाही सन्तान और धन मिलता है। सदाचार से अनेक दुर्गुण भी नष्ट हो जाते हैं। —मनु।

*　　　　*

सदा इस बात का ख्याल रखो, कि कहीं किसी पर मेहरबानी करते समय तुम अपने कर्त्तव्य से तो विमुख नहीं हो रहे हो। —श्री अरंडेल।

*　　　　*

आत्मिक विकास का पौधा सांसारिक विषय वासना की पृथ्वी पर नहीं उगता। —स्वामी रामतीर्थ।

*　　　　*

विरोध और वाद-विवाद के शत-शत आवर्त्तनों में ही मनुष्य, मनुष्य बनता है॥ —देश बन्धु दास।

*　　　　*

जिस राष्ट्र का भूतकाल उज्ज्वल नहीं रहा, उसका भवि-ष्य भी उज्ज्वल न होगा। —कार्लाइल।

* *

जड़ और आत्मा के सम्बन्ध का नाम ही सुन्दरता है।
—कवीन्द्र रवीन्द्र।

* *

महान आत्मा का जन्म और मृत्यु—दोनों ही—बड़े महत्त्व-शाली होते हैं। —सुकरात।

* *

उच्च आदर्श के लिये प्राण समर्पण करना शहीद होना है। —नैपोलियन।

* *

मानव-विकास का पहिला कदम है, अपना पाप स्वयं प्रकट कर उसका प्रायश्चित करना। —नर्मद।

* *

अपने कर्मों में उस ज्योतिप का जग-मगाता आलोक रहने दे, जिसको देखकर विश्व की आंखें चकाचौंध हो जाये।
—श्री कृष्ण मूर्ति।

* *

सब से मित्रता रखो तङ्ग जूते और फिक्र सौन्दर्य के भयानक शत्रु है। —मेरी पिकफोर्ड।

* *

हृदय की सुन्दरता सब से उत्तम सुन्दरता है। —नाजी मोटो।

* *

देर से न सोओ, खाने के साथ पानी न पीयो, इससे मांस बढ़ता है। —पोला नेग्री।

* *

इस लोक के सभी सुख इन दो बातों पर विशेष रूप से निर्भर रहते है, एक तो मित्रों के प्रति दयालुता दूसरे शत्रुओं के प्रति भद्रता। —राजा राममोहन राय।

* *

दया और प्रेम—इन्हीं दो शब्दों मे धर्म के सारे तत्त्व निहित हैं। —भगवान बुद्ध।

* *

संसार मे एक भी मनुष्य भूका रहे और मे अजीर्ण की औषधि करूँ, दुनियां के लोग वस्त्राभाव से व्यथित फिरें और मैं सुन्दर सुन्दर वस्त्रों से सन्दूक भरूँ। यही मानव जीवन का सब से काला कलङ्क है। —टालस्टाय।

बात चीत प्रिय हो, पर व्यर्थ न हो। चुहल की हो पर बनावट की बू न हो। स्वच्छन्द हो पर अश्लील न हो। अनोखी हो, पर असत्य न हो। —शेक्सपीयर।

*　　　　　*

पुरुषों और स्त्रियों का सम्मान ही उनकी आत्माओं का आभूषण है। —नीतिकार।

*　　　　　*

तुम्हें देखते ही जिसके मुंह पर मुस्कान न दौड़ जाय, आखों में स्नेह न खेलने लग जाय, उसके यहां कभी न जाओ, चाहे कञ्चन की ही वृष्टी क्यों न होती हो।—तुलसीदास

*　　　　　*

स्कूल हमें विश्व विद्यालयों की परिक्षा के लिये तैयार करते हैं, संसारिक परिक्षा के लिये नही। —लांक।

*　　　　　*

मनुष्य में भली भाँति पूर्णत्या का विकास होना ही शिक्षा है। शिक्षा प्राप्त करके मनुष्य अभिमानी नहीं विनम्र बनता है। —विवेकानन्द।

*　　　　　*

क्रोध,मन्द प्रकृति के पुरुषों को तीक्षण बना देता है, परन्तु साथ ही दरिद्र भी बना देता है। —बेकन।

सुन्दर वह है, जिसमें चेतन की, अमूर्त की और भाव की विजय हो। ब्रह्म चेतन है, अमूर्त है और भावमय है, अस्तु, वह सबसे बड़ा सुन्दर है। —हीगल।

* *

एक ही सामग्री भिन्न २ सजावटों या रचनाओं के कारण सुन्दर मालूम होती है। अतएव रचना ही सौन्दर्य का मूल मन्त्र है। —हर्बर्ट।

* *

अपनी सङ्कीर्ण स्वार्थ-मय आकाङ्क्षाओं को मानव समाज की आकाङ्क्षाओं में परिणत करो। —श्री कृष्ण मूर्ति।

* *

कोरी गीता पाठ करने की अपेक्षा यदि तुम शारीरिक व्यायाम करो तो स्वर्ग के नजदीक पहुँच सकते हो।

—स्वा० विवेकानन्द।

* *

क्रोध को सद् व्यहार से जीतो, झूठ को सचाई से दबाओ और बुराई को भलाई से शान्त करो। —महात्मा बुद्ध।

* *

अपने शत्रुओं से प्रेम करो, उन लोगों के साथ सद्व्यवहार करो, जो तुम्हारे साथ बुराई करते हैं, उनके लिये प्रार्थना

करो, जो तुम्हारे साथ अन्याय करते हैं। —महात्मा ईसा।

* *

धर्म चाहने वालों को ऐसा ही करना चाहिये, जिससे किसी जीव को तनिक भी पीड़ा न हो, और ऐसी ही बोली बोलनी चाहिये, जो सबको प्यारी लगे। —मनु।

* *

जिसके करने की आज्ञा वेद देते हों, धर्म शास्त्र भी जिसके प्रतिकूल न हों, तथा जो अपनी आत्मा को प्रिय लगे, उसी कर्म का दूसरा नाम धर्म है। —याज्ञवलक्य मुनि।

* *

मैंने बहुत पुण्य किया है, फिर एक छोटे मोटे पाप से मेरा क्या बिगड़ेगा ! ऐसा समझना भारी भूल है। क्योंकि बूद २ के पड़ने से घड़ा भर जाता है। —शुक्राचार्य।

* *

दान यश देता है, सत्य और सदाचार सुख देता है, और सत्य स्वर्ग देता है। —महाराज युधिष्ठिर।

* *

जो सदा नम्र बना रहता है, किसी पर रोष या घमण्ड नहीं दिखाता, तथा जो बढ़े बूढ़ों की सेवा करता है, उसके यश, आयु, कीर्ति. और बल यह चारों बढ़ते हैं —विदुर।

जिसे कल करना है, उसे आज ही करलो, जिसे आज करना है, उसे अभी। पल भर में प्रलय हो सकती है, फिर तुम्हें करने का मौका कब मिलेगा। —कबीर।

* *

अपने संकुचित प्रेम को विश्व-प्रेम का सुनहरा परिधान पहनाओ। —श्रीकृष्ण मूर्ति।

* *

जल का एक बिन्दु लाल लोहे पर पड़कर नष्ट हो जाता है, उसका नाम निशान भी नहीं बचता। परन्तु वही जल-बिन्दु कमल के पत्ते पर मोती की भाँति शोभा देता है, फिर वही स्वाति के संयोग से सीपी मे पड़ कर असली मोती बन जाता है। इसी प्रकार जैसी संगति होती है, वैसा ही गुण उत्पन्न होता है। —महाराज भर्तृहरि

* *

अगर बुरे कर्मों से बचो, तो पत्ते की टोपी की क्या जरूरत है —महाकवि शेखसादी।

* *

आम का पेड़ और सज्जन पुरुष दोनों की गति एक है। आमके पेड़ पर पत्थर मारो तो भी वह फल देता है और सज्जनों को कष्ट दो तो भी वह उपकार करते हैं। —तुलसी दास।

यदि याचना करनी है, तो सज्जन पुरुष से करनी चाहिए, दुर्जन से नहीं। क्यों की सज्जन से की गई याचना यदि विफल भी हो गई, तो उत्तम है, और दुर्जन के सामने सफल हुई याचन भी निकृष्ट है। —कालिदास

* *

साहसी बनो, फिर साहीसी बनो, और अनन्त बार साहसी बनो, यहीं मनुष्य का धर्म है। —दान्ते।

* *

मनुष्य एक प्रकार से अपने भाग्य के हाथ की गैंद है। सुख और दुःख दोनों थपेड़ों के सहारे भाग्य ही मनुज्य को खेल खिलाता है। कभी ज़मीन पर पटकता, और कभी आस्मान में उछालता है। यह सुख-दुःख का चक्कर तब तक नहीं छूटता जब तक खिलाड़ी का जी नहीं भरता—भाग्य के भोग का भुगतान नहीं होता। —महाकवि काऊपर।

* *

मौन रहने से मनुष्य के सब अवगुण छिप जाते हैं। मौनता बिना भूषण के ही मनुष्य को भूषित करती है। बिना किले के ही उसकी रक्षा करती है। बिना परिश्रम के ही ईश्वर की पूजा का फल देती है। बिना विद्या के ही बुद्धिमान् होने का यश देती है। —महाकवि लुक़मान।

* *

किसी काम के विपय मे पूरी जानकारी रखे विना ही उसे आरम्भ कर देना और ईश्वर में प्रीति उत्पन्न हुए विना ही उपासना करना वृथा है। जो ऐसा करता है, वह कोल्हू का वैल है, क्योंकि वह सदा दुःख और शोक में पड़ा घूमा करता है, पर यह नहीं जानता कि मैं किस दशा में हूँ।

—अकलीनूस हकीम।

* *

जो सद्-गुण सम्पन्न है, वही बुद्धिमान है, वही सज्जन है। और जो सज्जन है, वही सदा सुखी है। —पिथियस।

* *

अन्याय का सच्चा दण्ड कोड़े की मार अथवा मृत्यु नही है। अन्याय को नष्ट करना ही सच्चा दण्ड है।

—सुकरात।

* *

केवल एक ज्ञान के द्वारा जीवन यात्रा पार हो सकती है।मनुष्य को उचित है कि वह अपने अन्तः करण को व्यर्थ क्लेशमय न वना ले। —"मार्क्स आरीलियस।

* *

जो घटना होती है, वह योग्य ही होती है, क्यों कि परमात्मा जो कुछ कराता है, वह बुद्धिमत्ता के साथ कराता है।

ऐसी इच्छा मत करो कि तुम्हारे इच्छानुरूप ही घटनाएं हुआ करें। यह समझलो कि जो कुछ होता है, वह हितकारक है। —इपिक्टेटस।

*   *

इस दिव्य जगत की अलौकिक सुन्दरता का हमारे नित्य के सहवास की वस्तु हो जाने से हमें ध्यान नहीं रहता। यदि कदाचित हुआ भी, तो उसके विषय में हमारे अन्त: करण मे कृतज्ञता जाग्रत नहीं होती। —रसकिन।

*   *

अस्थिर, अव्यवस्थित और चंचल-चित्त के पुरुप किसी भी महान-कार्य को सम्पादन करने में समर्थ नहीं हुए।

—जार्ज इलियट।

*   *

जो मनुष्य शहद की मक्खी के डंक से डरकर शहद के छत्ते का त्याग करता है, वह शहद प्राप्त करने के योग्य नहीं है। —शेक्सपियर।

*   *

समुद्र मैं गोता लगाने वाले प्रत्येक गोताखोर को मोती की सीपें नहीं मिलतीं, परन्तु इस कारण से क्या उसे किनारे पे हाथ पर हाथ रखे बैठा रहना चाहिये। नहीं कभी नही,

उसे गोता तो लगाना ही चाहिये। —पोप।

* *

जो अपने समान ही सबको देखता है, वही पण्डित है।
—कृष्ण।

* *

उत्कर्ष और सफलता, उद्योग-शील मनुष्य के अनुचर हैं। उद्यम-शीलता की भुजाओं के सामने अभाव उल्टे पाँव रास्ता लेता है। —साधु वास्वानी।

* *

याद रखो, अपना सुधार और उन्नति हमें ही करनी है। उसके लिये आस्मान से फरिशते नहीं आयेंगे।
—गाजी अमानुल्लाखाँ।

* *

चिन्ता एक प्रकार की कायरता है और वह जीवन को विष-मय बनाती है। —चनिङ्ग।

* *

कोई तुम्हारे विषय मे चाहे कुछ समझा करे, परन्तु तुम जिसको सत् कार्य समझते हो, उसे अवश्य पूरा करो। निन्दा का विचार न करो, और प्रशंसा की चाह न करो।
—पीथा गोरस।

साहस ऊँचे से ऊँचे दर्जे की उदारता है, इस लिये कि साहसी पुरुष अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को भी मुक्त-हस्त हो कर व्यय कर देता है। स्त्रियों के हृदय पर पति की उदारता इतना प्रभाव नहीं डालती, जितना कि उनका साहस और वीरता। —कालटन।

* *

मरना निश्चित है, फिर दुःख करते हुए क्यों मरना चाहिए। —इपिक्टेटस।

* *

साहसी लोग इस बात की खोज नहीं करते कि शत्रु कितने है, परन्तु वे तो यह खोजते हैं कि वे कहाँ हैं ?

—द्विनीय एजीस।

* *

साहसी, कर्त्तव्य शील और परिश्रमी व्यक्ति ही लक्ष्मी को प्राप्त कर सकते हैं। —ड्रायन।

* *

संकट के समय, धीरज धारण करना ही मानों आधी लड़ाई जीत लेना है। —प्लाट्स।

* *

नर शरीर में रत्न वही, जो पर दुःख साथी।
खात पियत अरु स्वसत, श्वान मंडुक और भाथी।
—भारतेन्दु।

* *

जो मनुष्य ग्रन्थों से प्रेम करता है, उसे श्रद्धालु मित्रों, हितकारी उपदेशकों, विनोदी साथियों की कमी न रहेगी।
—बेरी।

* *

जब मै एकाग्र-चित्त होकर ज्ञानार्जन करता था, तब खाना, पीना तक भूल जाता था। जब मुझे ज्ञान प्राप्त हो चुका, तो मुझे जो आनन्द हुआ, उसमें पिछले सब दुख भूलगया। —कान्फ्यूशियस।

* *

पुरानी ईंधन जलाने को, पुराना चावल खाने को, पुराना मित्र विश्वास करने को, और पुराना ग्रन्थ पढ़ने को हितकर होता है। —कहावत।

* *

हे मन सज्जन कर वही, जाते यश रहजाये।
चन्दन देत घिसाय निज, पर तन देत बसाय॥
—रामदास।

स्त्री अपने केश से जितना भार खींचती है, उतना दो बैलों की जोड़ी से भी नहीं खींचा जा सकता। —पोलिश।

* *

मनमें प्रेम का उद्भव न होने की अपेक्षा प्रेम करके अपयश प्राप्त होना अच्छा है। —टेनिसन।

* *

जितनी चिन्ता करके हम मित्र प्राप्त करते हैं, उतनी ही चिन्ता के साथ जुड़ी हुई मित्रता की रक्षा करना चाहिए।
—पास्कल।

* *

प्रेम-व्यवहार संसार का प्रत्यक्ष अमृतरस है। जिसको दो, वही प्रसन्न हो पक्षपाति बनजाता है। —मिस रोज़।

* *

दौलत जो तेरे पास है, रख याद तू एक बात।
खा तू भी और कर, खुदा की राह में ख़ैरात॥
—नज़ीर

* *

उचित कामों को जहाँ तक हो सके, शीघ्र कर डालना चाहिये। किसी शुभ कामों के मुहूर्त्त की प्रतीक्षा नहीं करना

* *

चाहिए। क्यों कि शुभ कामों का मुहूर्त्त शीघ्रता ही है।

—कार्लाइल।

*　　　　*

जीवन-संग्राम मे विजय प्राप्त कर लेना कोई आसान काम नहीं है। उसके लिये कठोर साधना की आवश्यकता है।

—सर आर्थर हेल्पस।

*　　　　*

समस्त सांसारिक वासनाओं के पूर्ण होने के अतिरिक्त जो व्यक्ति पार-लौकिक सुख, वासनाओं की भी पूर्ति की अभिलाषा रखते हैं, वे सर्व प्रथम उदारता, कर्त्तव्य-निष्ठा और परोपकारिता का अनुसरण करें। —रस्किन।

*　　　　*

बिना वेदनाओं के विजय नहीं मिलती। विजय-गौरव विष-पान के समान है जो लोग जनता से अपने मस्तक पर यश का मुकुट रखवाना चाहते है, वे प्रत्येक कार्य को सोच विचार कर और अध्यवसाय के साथ करते हैं।

—कवीन्द्र रवीन्द्र।

*　　　　*

जो लोग गिरते हैं, खड़े होने से प्रकृतिक शक्ति उन्हीं में होती है। अतःगिरने के भय से अग्रगामी बनने के गौरव से वञ्चित न रहो। —जो जेफ।

सत्यकार्य, आदर्श व शुभ समय को नहीं खोजता।

—ग्लाड स्टोन।

*　　　　*

ऐसा एक भी हिन्दू नही है, जो अपने ही घर के अनुभव से इस बात को न जानता हो कि वैधव्य क्या चीज है? विधवा का जीवन व्यथा, यन्त्रणा, कष्ट-सहन और शुष्कता का जीवन होता है। —कुमार गंगा नन्द सिंह

*　　　　*

पैगम्बर साहब ने पर्दे की जो प्रथा चलाई थी, वह शील को प्रदर्शित करने के लिये चलाई थी। और शील ऐसी चीज़ है कि कोई स्त्री चाहे कितनी ही आधुनिक क्यों न होगई हो, फिर भी वह उसे सर्वोच्च स्थान देगी।

—श्री मती सरोजनी नायडू।

*　　　　*

भारतवर्ष मे विवाह त्याग की एक धार्मिक विधी-ही बन गया है। —महात्मा एण्डरूज।

*　　　　*

संसार के अत्यन्त अपवित्र धंधों से भी, दीर्घायु के लिये कुँआरा-पन कहीं ज्यादा नाशक है। किसी कुँवारे

के दीर्घायु प्राप्त करने का कोई एक उदाहरण भी नही है ।

—क्रिस्तो फरवान स्पलैण्ड ।

*　　　　*

कामुक्ता दुनिया मे से उस समय तक दूर नही हो सकती, जब तक मनुष्य मनुष्य हैं, और स्त्रियाँ स्त्रियाँ है ।

—ला० लाजपतराय

*　　　　*

बेशक, प्रत्येक चतुर व्यक्ति जिसे अच्छी तरह जीने की इच्छा है, जरूर शादी करे । —टालस्टाय ।

*　　　　*

वैधव्यों को मै हिन्दूधर्म का भूपण मान्ता हूँ, विधवा बहिन को देखने पर अनायास ही, उसके प्रति मेरा मस्तक झुक जाता है । —महात्मा गान्धी ।

*　　　　*

अपने मन को सदा धूप घडी की तरह बनाओ, जो केवल दिन के उज्ज्वल प्रकाश के समय को बताया करती है। तात्पर्य यह है कि सदा जीवन के शुभ अवसर की ही बातें ध्यान मे रखने का उद्योग करो। न कि दुर्दिनों के अन्धकार के नाम पर रो रो कर अपना उत्साह भंग करने की चेष्टा करो । —सर एडविन आर्नाल्ड ।

*　　　　*

जिस देश अथवा राष्ट्र में नारी पूजा नही है, वह देश या राष्ट्र कभी महान या उन्नत नहीं हो सकता। नारी रूपी शक्ति का मान न करने ही से आज हमारा अधःपतन हुआ है। स्त्रियाँ माया की प्रतिमा हैं, जब तक उनका उद्धार न होगा, हमारे देश—का उद्धार होना असम्भव है।

—स्वामी विवेकानन्द।

* *

मनुष्य की इच्छा ही उसके पुनर्जन्म का कारण होती है। —मीरा बाई।

* *

किसी देश की तुलना अन्त में उसके व्यक्तियों की योग्यता पर होती है। —जे० एस० मिल।

* *

हम व्यवस्थाओं से—कायदे-कानूनों से, बहुत कुछ लाभ की आशा करते हैं, परन्तु मनुष्य से बहुत कम।

—बी डिजरेली।

* *

जो वस्तु दूसरों की अधीनता में है, वह सब दुःख है। और जो अपने अधिकार में है, वह सुख है। - मनु।

* *

धैर्य व धीरज वीरता का अति उत्तम मूल्यवान और दुष्प्राप्य अंग है। धीरज सर्व आनन्दों एवं शक्तियों का मूल है। —जान रस्किन।

* *

संसार स्वप्न की तरह है। जिस प्रकार जागने पर स्वप्न झूठा प्रतीत होता है, उसी प्रकार आत्मा का ज्ञान होने पर यह संसार मिथ्या मालूम होने लगता है।

—महात्मा याज्ञवलक्य।

* *

जिसने गर्व किया, उसका अवश्य पतन हुआ।

—महर्षि दयानन्द।

* *

जो धोके से धर्म की आड़ में पाप करता है और मिथ्या मत का प्रचार कर लोगों को ठगता है, उसके समान दूसरा पातकी नहीं हो सकता। —पं० जवाहर लाल नेहरू।

* *

जो मँगलाचार युक्त हैं, निरन्तर जितेन्द्रिय है, जप, संध्या और हवन करते हैं, उनका विमि पात कभी नही होता

—मनु।

* *

यदि मनुष्य सीखना चाहे, तो उसको प्रत्येक भूल उसे कुछ न कुछ सिखा देता है। —डिकेन्स

* *

मैं जो कुछ चाहता हूँ, जिसके लिये मैं जीवित हूँ, और जिसकी खातिर मैं मरना भी पसन्द करूँगा, वह यह है कि अछूत पन जड़ से मिट जाय। —महात्मा गान्धी।

* *

दो प्रकार की स्वतन्त्रता होती है। एक मिथ्या, जिसमें मनुष्य अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिये स्वतन्त्र है। दूसरी वास्तविक, जिसमें मनुष्य अपना कर्त्तव्य निवाहने के लिये स्वतन्त्र है। —किंगस्ले।

* *

राजनैतिक स्वतन्त्रता उस समय तक स्वतन्त्रता नहीं प्रदान कर सकती, जब तक हमारे विचार स्वतन्त्र न हों।
—रवीन्द्र नाथ टैगोर।

* *

मनुष्य बहुधा लड़ते हैं, क्यों कि वे विवाद करना नहीं जानते —जी० के चेस्टर टन।

* *

युद्ध उजड्डों का व्यापार है। —नैपोलियन।

* *

दुःख की उत्पत्ति पाप से होती है। —बुद्ध।

* *

सुन्दरता के अश्रु मुस्कान से अधिक प्रिय होते हैं। —कैम्पवेल।

* *

अस्थिर भाग्य के नीचे झुक जाते हैं, परन्तु शक्तिवान अचल रहते हैं। वह उसका सामना करते और विजयी होने की चेष्टा करते हैं। शक्ति ही के लिये आशा का द्वार बन्द हो जाता है, पर बलवान भाग्य की मार से बहुबल खींचते हैं, और नवजीवन प्रारम्भ करते हैं। —फेलथम।

* *

विधाता ने पुरुषों को ठीक करने के लिए स्त्रियों को बनाया है, यदि यह न होतीं, तो हम पशुवत होते। स्वर्ग में क्या है? जो स्त्रियों में नहीं, अद्भुत ज्योति, पवित्रता, सत्य, अनन्त-आनन्द और अमर प्रेम सब इन में है। —आटेव।

* *

डिमोक्रेसी का अर्थ संघ-विशेष द्वारा शासन नहीं, इस का तात्पर्य सामाजिक सभ्य व्यवहार या विशिष्ट आचरण है।

—सरराधा कृष्ण।

* *

मृत्यु कभी २ उस मनुष्य को जीवित छोड़ देती है, जो उससे नहीं डरता, और उसको मार डालती है, जो उससे भय भीत होता है।

—मुतनब्बी।

* *

मैं देखता हूँ कि लोग अपनी स्त्रियों को मारते हैं, पर मेरा हाथ उसी समय टूट जाये, जिस समय मैं अपनी स्त्री को मारूँ।

—क़ाज़ी शुरैह।

* *

आत्मा से परीक्षा, उसको कहते हैं, कि जो जो अपनी आत्मा अपने लिये चाहे, सो सो सबके लिये चाहना और जो जो न चाहे, सो सो किसी के लिये न चाहना।

—महर्षि दयानन्द।

* *

विश्व-विद्यालयों से वह लाभ नहीं हो सकता है, जो होना चाहिये था, आज दिन सैकड़ों ग्रेजुएट ऐसे पड़े हैं, जिनकी पहिले तो कुछ इच्छायें ही नहीं हैं, यदि हैं भी, तो

केवल क्षुद्र क्लर्की करने की या चार पैसे कमाने की।

—सर वी० सी० कुमार स्वामी।

*

पुण्यात्मा-पत्नी परमात्मा की सब कृपाओं से बड़ी कृपा है। वह पतिके लिये देवी है, सकल गुणों की मूर्ति है। हीरा है, मोती है, दौलत है। उसके स्वर में उसे मधुरता और उस की मुस्कराहट में उसे आनन्द दिखाई देता है।

—जरमीटेलर।

*

संसार में और कोई वस्तु ऐसी मनोहर नहीं, जितनी सुशीला, पुण्यात्मा और सुन्दर स्त्री।

—हंट।

*

स्त्री शिक्षा में एक बड़ी कमी यह है कि स्त्रियों की आवाजों को सुधारने का उद्योग नही किया जाता। इसी के द्वारा वह अपने पति को सुमार्ग में प्रवृत करा सकती है। उसका मनोरंजन कर सकती है। अपने कुटुम्ब के आराम का कारण बन सकती है। इस लिये कन्या पाठ शालाओं में इस पर विशेष रूपसे ध्यान देना चाहिये। क्योंकि प्राय; इस गुण के न होने से स्त्री का पति और बालक मानों शोकाकुल रहते हैं, अथवा मन बहलाने के लिये कुमार्ग गामी हो

जाते हैं। —स्लेनी।

*   *

किसान लोग अपने देश के गौरव का कारण है, उनकी यदि अधोगति हुई तो इस क्षति की पूर्ति हम किसी भी दूसरे साधन से नहीं कर सकेंगे। —गोल्ड स्मिथ।

*   *

मनुष्यों मे ऐसे लोग भी हैं, जो अपने सरल- जीवन में ही सन्तुष्ट हैं। उनकी सवारी दो पैर है और उनका ओढ़ना बिछौना मिट्टी हैं। —अरबी कवि मुतनब्बी।

*   *

डिग्रियॉ दिलवाने से ही काम न चलेगा , विश्व-विद्यालयोंका मुख्य कर्त्तव्य है, देश के चरणों में ऐसे रत्न तरू समर्पित करना, जो समाज की प्रत्येक प्रकार की उन्नति कर सकें, जो मृदुता और विद्वत्ता के आगार हों, जिनका आचारण सर्व-प्रिय हो, और जो उदार चेता हों।

—डाक्टर गंगानाथ झा।

*   *

नेक काम करने वाला संसार में वांछनीय है। बुरेकाम करने वाले का दिल हमेशा लरजता रहता है।

—सैयद अहमद अदीब पेशावरी।

*   *

समय परिवर्तन शील है। जो लोग समय के परिवर्तन को जानते हैं, और समय के अनुकूल होकर चलते फिरते हैं, वे ही बुद्धिमान और लोक चतुर है।

—सर वाल्टर स्काट।

*　　　*

सारा संसार तुम्हारे समक्ष है। जीवन ठीक वैसा ही है, जैसा तुम उसे बनाते हो। यदि तुम स्वस्थ्य हो, शक्ति वान हो, तथा साधारण कोटि की बुद्धि रखते हो, तो तुम स्वयं अपने स्वामी हो, अपने इच्छानुसार मानसिक, शारीरिक-उन्नति कर सकते हो।

—बर्नार्ड मैकफैडन।

*　　　*

संसार परिवर्तन शील है, ईश्वर अपनी इच्छा को विविध प्रकार से पूर्ण करता है। जिसमे ऐसा न हो कि एक अच्छे से अच्छा आचार भी देश को हानि पहुँचावे।

—टेनिसन।

*　　　*

सफलता का सीधा मार्ग अपने कार्य से प्रेम करना है। मनुष्य उसी कार्य का उत्तमता से सम्पादन कर सकता है, जिससे उसका प्रेम हो।

—जेम्स बी०ड्यूक।

*　　　*

जा के पाँव न फटी बिनाई, सो क्या जाने पीर पराई

—कहावत ।

*   *

व्यर्थ के लिए शक न करो । सदा प्रसन्न रहो । चित्त को मृदुल, कोमल और हर्षमय बनाओ । —बनार्डमैक फैडन

आरटिस्ट को मन्तक़ियों की तरह किसी नतीजे पर पहुँचने में एक नुक़ते से दूसरे नुक़ते तक रेंगना नहीं पड़ता । —टैनीसन ।

*   *

आरोग्य मोल लिया जा सकता है । शिक्षा ख़रीदी जा सकती है । परन्तु भारतीयों के पास मोल लेने और ख़रीदने की शक्ति कहाँ है ? यहाँ तो प्रति मनुष्य की आय एक आना है । —डाक्टर मैनलीपेच ।

*   *

आलस, निद्रा, और जम्हुआई ।
यह तीनौ हैं, काल के भाई ॥ —कहावत ।

*   *

आज्ञा द्वारा शिक्षा का मार्ग बहुत लम्बा हो जाता है, और उदाहरण द्वारा छोटा । —सैंकी ।

*   *

मस्तिष्क, बर्तन की तरह भरने को नहीं है, प्रत्युत प्रज्व-लित होने वाला अग्नि-कुण्ड है। —प्लुटार्च।

*   *

मस्तिष्क पर समस्त वस्तुओं का प्रभाव मनकी एकग्रता पर अवलम्बित है। —स्टेवर्ट।

*   *

दुर्भाग्य से आज कल क्रियात्मक शिक्षा की वाचक शिक्षा अधिक दी जाती है। —मानें।

*   *

पढ़ाने में विद्यार्थियों के मनोरजंन का ख्याल रखन पहिली बात है। —क्यूरी।

*   *

शिक्षित मस्तिष्क विश्व की समस्त वस्तुओं के ज्ञान के लिये उपयुक्त होता है। —थ्रिंग।

*   *

शिक्षण से तात्पर्य समुचित मानसिक अभ्यासों का बनाना है। —कोलर।

*   *

सुन्दर वही, जिसके कार्य सुन्दर हैं। —स्मिथ

*   *

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य साधना है, ज्ञान तो गौण गुण है । —थ्रिंग ।

*　　　　　　*

जीवन का संगठन एक पूर्ण सुसंगठित अंश समूह है । इस लिये बालकों की शिक्षा में एकत्त्व और एकता यत्न होना चाहिए । —फ्रोबेल ।

*　　　　　　*

संसार मे चलते समय केवल इतनी ही खबरदारी रखना हमारे हाथ में है, कि हम सज्जनों का सहवास करें, और दुर्जनों से चार कदम दूर रहें ।

—रामकृष्ण परमहंस ।

*　　　　　　*

कष्ट के बिना फल नहीं मिलता, जो पहिले कष्ट(तप) के दुख सहते है, वे आगे सुख के फल भोगते है ।

—समर्थ स्वामी ।

*　　　　　　*

भाई, यदि तुम्हें पैसा ही पैदा करना है, तो उसे धर्म पूर्वक पैदा करो । इन्द्रियों का उपभोग करो, अवश्य । किन्तु अधर्म पूर्वक नहीं । धर्म जहाँ तक तुम्हें आज्ञा दे, वहीं तक करो । —व्यास।

*　　　　　　*

भक्ति से मेरा तात्विक ज्ञान हो जाता है कि मैं कितना हूँ और कौन हूँ। इस प्रकार मेरी तात्विक पहिचान होने पर वह मुझ में ही प्रवेश करता है। —श्री कृष्ण।

* *

पृथ्वी भर में घूमने फिरो, जो कुछ भी सीखने योग्य हो, सीखो, और किसी के अधीन मत हो।

—मैक्सिम गार्की।

* *

जिनमें कुटिलता नहीं है, जिनमें असत्य नहीं है और जिनमे माया नहीं है, वे पुरुष अक्षय ब्रह्मधाम को प्राप्त होते हैं। —उपनिषद्।

* *

किसी के गुणों की प्रशंसा करने में अपना समय व्यर्थ नष्ट न करो। उसके गुणों को अपनाने का यत्न करो।

—कार्ल मार्क्स।

* *

कमलिनी के पत्ते पर पड़ी हुई, पानी की बूंद बहुत ही क्षण-स्थायिनी होती है, न जाने किस समय वायु का झोंका लगने से गिर पड़े, इसी प्रकार जीवन भी क्षण भंगुर ही है।

—शंकराचार्य।

* *

अपार धनशाली कुवेर भी यदि आमदनी से अधिक खर्चा करे, तो कङ्गाल हो जाता है। —चाणक्य।

* *

संसार ही महा पुरुषों को ढूंढता है, न कि महा पुरुष संसार को। —कालीदास।

* *

अब संसार का स्वामित्व उद्योग और विज्ञान शास्त्र के हाथ में रहेगा, विज्ञान के पण्डित और उद्योगी पुरुष अपनी शक्ति से सारी दुनियाँ को वशीभूत कर लेंगे।

—उसाल वान्दी।

* *

जब तक हम लोग छोटे बच्चों की तरह बुद्धिमान नहीं होंगे, तब तक हम ईश्वर को नहीं पा सकेंगे। —टालस्टाय।

* *

न पढ़ने की तीन निशानी।
कंघा, शीशा, सुर्मेदानी॥

—कहावत।

* *

चमकने वाली सभी चीजें स्वर्ण नहीं होतीं।

—महात्मा गान्धी।

* *

विपम काल में सन्तानोत्पत्ति करना एक महान हिंसा है यह समझ कर भी विषयाशक्ति को रोकने की जरूरत है।

—महात्मा गान्धी।

*　　　　*

बाल विवाह वास्तव में सब दृष्टियों से उन सब अनिष्टों का मूल कारण है, जिनके कारण हमारा देश पीड़ित हो रहा है। जब तक इसको पूरी तौर और जल्दी ही न मिटाया जायेगा, तब तक हमारी स्त्रियों की उन्नति अथवा हमारे देश के पुनरुद्धार की कोई आशा नहीं की जा सकती।

—श्रीमती पार्वती चन्द्रशेखर अय्यंर।

*　　　　*

यदि संसार में कोई स्त्री न रहे, तो यह इस प्रकार सुनसान दृष्टिगोचर हो, जिस प्रकार वह मेला, जिसमें न तो किसी प्रकार की बिक्री हो, और न जहाँ, मनोरंजन का कोई अन्य सामान हो, उसकी मुस्कराहट के बिना समस्त संसार इस प्रकार निकम्मा हो जाये, जिस प्रकार साँस के बिना शरीर, फल-फूल बिना वृक्ष, शान्ति के बिना बुद्धि, नींव के बिना मकान, हाकिम के बिना किला। यदि स्त्री न होती, तो प्रेम न होता, और जब प्रेम न होता, तो आराम न होता। संसार में जो खूबी है, वह एक मात्र इसी-स्त्री-के कारण है।

यदि संसार मे कोई ज्योति की रेखा है, तो इसी के कारण से।

—लेजो।

*　　　　*

इस देश का सब से बड़ा मर्ज क्या है? उत्साह पूर्ण मौलिकता, साहस, और अध्यवसाय का अभाव!

—सर चिम्मन लाल-सीतलवाड।

*　　　　*

स्त्रियों का प्रश्न पुरुषों का प्रश्न है, क्योंकि दोनों का एक दूसरे पर असर पड़ता है। चाहे भूत काल हो, या भविष्य, पुरुषों की उन्नति बहुत कुछ स्त्रियों की उन्नति पर निर्भर है। तुम स्त्रियों को अपने दासत्व से पूर्णतः मुक्त होने दो, उन्हें अपने बराबर समझो। —लाला लाजपतराय।

*　　　　*

विवाह और उससे उत्पन्न जिम्मेदारियाँ स्त्रियों का सर्वोच्चकार्य है। मातृत्व सारी पुरोहिताईयों मे सर्वोत्तम है।

—आचार्य ध्रुव।

*　　　　*

जिस घर मे स्नेह और प्रेम का निवास है, जिसमे धर्म का साम्राज्य है, वह सम्पूर्णता सन्तुष्ट रहता है। उसके सब उद्देश्य सफल होते है।

—तामिल वेद।

*　　　　*

स्त्रियों की बहु-संख्या स्वभावतः अविवाहित कुमारियाँ बनने की अपेक्षा घर की लक्ष्मियाँ, सरस्वतियाँ और अन्नपूर्णाएँ बनने के अधिक उपयुक्त हैं।

—बा० भगवान दास काशी।

*

कबिरा मन पंछी भया, भावै तहँवाँ जाये।
जो जैसी संगति करे, सो तैसा फल खाये॥

—कबीर।

*

प्रत्येक प्राणी अपने विचार और कर्मों को सदैव ध्यान से देखे। विचारावली प्रत्येक कार्य की जननी है, एवं चित्त की एकाग्रता या चित्त संयम उसका स्वामी है।

—आर्थर हेल्पस।

* *

यदि तुम संसार को अपने ऊपर मोहित करना चाहते हो, यदि तुम्हें जगत के लोगों को अपने वश मे करना है, तो तुम अपनी एक कुटेव को छोड़ दो, वह कुटेव एक मात्र कटु-सम्भाषण है। —गो० तुलसीदास।

* *

जो कुछ तुम्हारे पास है, बेच डालो, और सब दान दे दो। अपने द्रव्य को उस अक्षय कोष में रखो, जहाँ चोर नहीं पहुँचते। —जीज़स क्राइस्ट।

*   *

कभी भूल कर भी अप्रिय-व्यवहार मत करो, अप्रिय व्यवहार पशुत्त्व का द्योतक है। —रहीम।

*   *

यदि तुम्हारी इच्छा फूलों से सजे सिंहासन पर बैठने की है, तो वहाँ तक पहुँचने के लिये मार्ग में जितने भी काँटे पड़े मिलें, सब को अपने पैरों से रौंद डालो, रास्ते के समस्त रोड़ों को पीस कर विजय प्राप्त करो। —लिंकन।

*   *

संसार एक पुल के समान केवल पार करने के लिए निर्मित है। इस पर कुछ बनाने का प्रयास निष्फल है।

—इरविन आर्नल्ड।

*   *

जो लोग अत्यन्त दुर्बल हैं, वे भी एक काम पर अपनी शक्ति को लगा कर कुछ न कुछ सिद्धि को प्राप्त कर सकते हैं। —कार्लाइल।

जो मनुष्य किसी आदर्श की खोज में सदा प्रयत्न किये जाता है, उसकी शक्ति की सीमा का पता पाना असम्भव है। --जेनकिन।

* *

उत्साह एक ऐसी वस्तु है, जिसके सामने बडी २ बलवती शक्तियाँ भी हार मानती हैं। उत्साही के सामने तरह २ की बाधाये और कार्यविरोधक विपत्तियाँ सदा आज्ञा पालक दासियों की भाँति उपस्थित रहती है। —टालस्टाय।

* *

पराजय ही उच्च शिक्षा है। जिन्हें उत्कर्ष प्राप्ति की इच्छा हो, वे सब से प्रथम ऐसे कार्य करें, जिन से पराजय का मूल्य ज्ञात हो सके। क्योंकि पराजय ही तो उन्नत होने का प्रथम सोपान है। —वेण्डेल फिलिप्स।

* *

काम करो, संसार का सार काम है, कीर्ति की प्राप्ति काम करने से ही होती है। —डेविड विल्की।

* *

यह कोई गौरव की बात नहीं है कि हमारा कभी पतन ही नहीं हुआ। जितनी बार पतन हो, उतनी बार उठ सकने

में ही गौरव हैं। —गोल्ड स्मिथ।

*　　　　*

प्रत्येक सत्कार्य पवित्र है। और कार्य का सम्पादन करना ही पूजा करना है। —कार लाइल।

*　　　　*

सत्य के साथ एक सौन्दर्य की पुट मिला दो, घर भर तुम्हें दिल से प्यार करेगा। —ग्लाड स्टोन।

*　　　　*

काम, क्रोध, और लोभ यही मनुष्य के तीन प्रबल शत्रु हैं। —गो० तुलसीदास।

*　　　　*

दूसरों की सेवा करना अपनी सेवा करना है।

—एमर्सन।

*　　　　*

उन लोगों की दशा कितनी शोचनीय है, जिनमें धैर्य नहीं। —शेक्स पियर

*　　　　*

जिन्दगी एक बाजी के समान हैं, हार जीत तो हमारे हाथ में नहीं है। पर बाजी का खेलना हमारे हाथ में है।

—जर्मी टेलर।

*　　　　*

स्त्री, संसार का अमूल्य धन है। —डेविड विल्की।

* *

जहाँ अच्छी बात का आदर न हो, वहाँ चुप रहना ही बोलने से अच्छा है। —अरस्तू।

* *

अपने आप को वश में रखने से ही पूर्ण मनुष्यत्व प्राप्त होता है। —हर्बर्ट स्पेन्सर।

* *

संसार में कोई वस्तु बेकार नहीं, सब अपनी २ जगह काम देती हैं। —लाँग फेलो।

* *

विचार पूर्ण विनोद, और मर्यादा पूर्ण साहस बुड्ढे, जवान सब के लिये उदासी की अच्छी दवा है। —लूथर।

* *

माँगना एक लज्जास्पद कार्य है। प्राप्त करना ही सच्चे मनुष्यों का कर्त्तव्य है। —महात्मा गान्धी।

* *

सब से प्रेम करो, और बहुत कम पर भरोसा, परन्तु किसी के साथ बुराई न करो। —शेक्स पियर।

* *

जो व्यक्ति अपने भेद को छिपा कर रखता है, वह अपनी सलामती अपने क़ब्ज़े में रखता है।

—हज़रत उमर।

*　　　　*

निकाला चाहाता है, काम क्यों तानों से तू ग़ालिब।
तेरे बे मेहर कहने से, वह तुझ पर मेहरबां क्यों हो?

—ग़ालिब।

*　　　　*

बिना विद्या के मनुष्य, बिना सींग वाला पशु है।

—नीतिशास्त्र।

*　　　　*

चाहे मुझे सूली पर क्यों न चढ़ा दिया जावे मगर मैं सच्ची बात सुनाने से बाज़ नहीं रहूंगा

—स्वा० दयानन्द।

*　　　　*

दूसरों की बातें सुनना भी एक बड़ा भारी काम है। इसी में बात चीत का गुण देखा जाता है, और इसी से नम्रता और बुद्धिमानी आती है। —विलियम टैवल।

*　　　　*

जो बात किसी भी सभ्य पुरुष को अपने मुंह से नही

निकालनी चाहिए, उस बात या उन शब्दों का उत्तर देना असभ्यता है। —स्टिफेन डगलस।

*   *

मनुष्यों को अपने कृत्यों का दण्ड अवश्य भोगना होगा। जप, तप और यज्ञ, हवन करने से अपने किये की सज़ा से वे मुक्त नहीं हो सकते। —महात्मा बुद्ध।

*   *

दुनिया में वही भाग्यवान पुरुष है, जिसे कुछ न कुछ कार्य मिल गया है। उसे किसी और प्रसन्नता की आवश्यकता नही है। —कार्लायल।

*   *

सफलता की कुंजी यह है कि असफलता के पश्चात् फिर हम उठकर उसी प्रकार काम करने लगें, जैसे पहिले करते थे। —रस्किन।

*   *

सद्गुणी स्त्री संसार में सबसे श्रेष्ठ रमणीय वस्तु है। —हन्ट,

*   *

अठारह पुराण पढ़कर मुझे दो बातें ही हाथ लगी हैं,

एक तो परोपकार करना धर्म है, दूसरे किसी को दुःख देना पाप है। —महर्षि व्यास।

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक सद्-इच्छा से धर्म-पालन करती हैं। —लूथर।

*　　　　　　*

उत्तम पुरुष, विघ्न के बार २ पड़ने पर भी आरम्भ किया हुआ काम पूरा किये बिना कभी नहीं छोड़ते।

—भर्तृहरि।

*　　　　　　*

पुरुष के लिये आवश्यक है, समझ और शक्ति। स्त्री के लिये आवश्यक है, मृदुता और गम्भीरता।

—सर रिचर्ड टवलि।

*　　　　　　*

विद्या से इज्जत मिलती है, संस्कृत के एक श्लोक में कहा है—विद्वत्ता और राजा की पदवी, ये दोनों कभी बराबर नहीं समझी जा सकती। राजा केवल अपने देश में पूजनीय है, और विद्वान तो देश-परदेश सभी जगह पूजा जाता है।

—चाणक्य।

*　　　　　　*

समता अर्थात् मन को स्थिर रखना, और आपे से बाहर न हो जाना, सुख के समय का सद्गुण है और हिम्मत तथा धैर्य दुःख के समय का। सुख में दुर्गुण प्रकट होते हैं और दुःख में सदगुण। —वेकन।

* *

मुझे स्त्री की भृकुटि-भंगिया का जितना भय लगता है, उतना किसी का नहीं। —साउदी।

* *

स्त्री, शान्ति की देवी है, इसे उच्च पद से नीचे गिराना केवल जंगली पन है। —फोर्डायस।

* *

सौन्दर्य के कारण, स्त्री घमण्डी हो जाती है, लज्जा से वह देवी बन जाती है, नेकी से उसकी प्रशंसा होती है।

—शेक्सपियर।

* *

जो स्त्री अपने पति और पुत्रों को सदैव सानन्द रखती है, उसके समक्ष जगत की महारानी का वैभव भी तुच्छ है।

—गोल्डस्मिथ।

* *

पुरुष के समान स्त्री को भी सुख और आराम की आ-

वश्यकता है। —कोल्टन।

* *

मात के स्वभाव का परिणाम उस के पुत्र में अवश्य ही दृष्टिगोचर होता है। —कार्टर।

* *

यदि स्त्री कुछ अपराध करती है, तो वह क्षमा माँगने के लिये भी एक पैर तैयार रहती है। किन्तु यदि वही अपराध पुरुष से होता है, तो स्त्री उसे तुरन्त ही भूल जाती है।
—बुलवर।

* *

जिस प्रकार दर्पण में देखने वाले का प्रति विम्ब दीखता है, उसी प्रकार पति के सुख-दुख आदि मनोविकारों का प्रति विम्ब पत्नी के मुख़ पर दीख जाता है। —इज्या समस।

* *

स्त्रियाँ अपने कर्त्तव्य का पालन करते समय किसी भी संकट की परवाह नहीं करतीं। प्रेम, आदर, और धर्म के विरुद्ध उनका आचरण होना अशक्य है। दया उनका शील है। सुख और सत्ता उन्हें मामूली मालूम होती है। रोगी की शुश्रूपा करना ही उनका नैसर्गिक गुण है। संकट को टक्कर

देने वाला उनके समान कोई धीर-भट नहीं।

—वालफर।

* *

स्त्री, मनुष्य का दाहिना हाथ है। —ल्यामर टाईन।

* *

माता के प्रेम का अभाव क्या किसी और से पूरा हो सकता है ? —वाशिंगटन अर्विङ्ग।

* *

जिस समय माता बालक को गोद में लेकर बैठती है, उस समय उसकी प्रेमन्दृष्टि कौनसा कुशल चित्रकार खींचने में समर्थ है ? —किङ्ग्ज़ले।

* *

पातिव्रत ही स्त्रयों का मुख्य सदगुण है। —एडिसन।

* *

बालक सुन्दर हो या कुरूप, वह माता के अक्षय प्रेम का हिस्से दार है। —हर्टर।

* *

स्त्री के हृदय में प्रेम का अखण्ड झरना रहता है। उसका शुष्क होना असम्भव है। —बुलवर लिटन

* *

अपने स्थान और अधिकार को ग्रहण करो, वह तुम्हारी सम्पत्ति है, दूसरे मनुष्य स्वयं सम्मत हो-जायेंगे। संसार न्यायवान है, वह प्रत्येक मनुष्य को अपना अस्तित्त्व जमाने की पूर्ण स्वाधीनता देता है। —एमरसन।

* *

देवता भी उस से ईर्ष्या करते हैं, जो एक कुशल सारथी की भाँति अपनी इन्द्रियों को बस में रखता है, जो निराभिमान है, निर्विकार है। —महात्मा बुद्ध।

* *

एक आदर्श जननी सौ उस्तादों से भी श्रेष्ट है।
—जार्ज हर्बर्ट।

* *

यदि स्त्री स्त्रीत्व के गुणों से रहित हो, तो और सब निआमतों के होते हुए भी गार्हस्थ जीवन व्यर्थ है। यदि किसी की स्त्री सुयोग्य है, तो फिर ऐसी कौनसी चीज़ है, जो उसके पास मौजूद नहीं? और स्त्री में योग्यता नहीं, तो उसके पास है ही क्या चीज़? —ऋषि तिरु वल्लुवर।

* *

वीरत्त्व का वास्तविक अर्थ पुरुषार्थ है और इसमें उन

सब गुणों का समावेश है, जो मनुष्योचित्त है —जिनके कारण मनुष्य वास्तविक मनुष्य है। —प्रो०बदरीनाथ वर्मा।

* *

पराजय क्या है ? सिर्फ शिक्षा, किसी उत्तमतर वस्तु की ओर पदार्पण मात्र। —वेन्डल फिलिप्स।

* *

अस्पतालों और चिकित्सकों का बढ़ना सच्ची सभ्यता का चिह्न नहीं है। हम शरीर की अपेक्षा आत्मा का घाव भरना चाहते हैं। यदपि मैं अपने डाक्टर मित्रों से अपना इलाज कराता हूँ, फिर भी मैं यह बात दुहराता हूँ कि हम लोग शरीर के सम्बन्ध में जितना ही संयम से काम लें, उतनी ही हमारी और देश की भलाई होगी।

—महात्मा गान्धी।

* *

तेरा स्वर्ग तेरी माता के चरणों में है।—मुहम्मद साहब

* *

मैं जो कुछ करता हूँ, और जैसा भी हो सकता हूँ, वह सब दैवी प्रकृति वाली मेरी माता का ही प्रसाद है।

—अब्राहीम लिंकन।

* *

देवी, तू रात्री का तारा और प्रातः काल का हीरा है, तू ओस की बूँद है, जिससे काटों के मुँह भी मोतियों से भर जाते हैं। —टाम्सरो।

*   *

स्त्री पुरुष की अर्द्धाङ्गिनी है, उसकी सर्वश्रेष्ठ मित्र है धर्म अर्थ और काम का मूल है। जो उसका अपमान करता है, उसका नाश होता है। घर का धन, और उसकी शोभा भी स्त्री ही है। इस लिये उसकी रक्षा करनी चाहिए —महाभारत।

*   *

न्याय से बढ़कर कोई रक्षक नहीं, विचार से बढ़कर कोई राजा नहीं, पदार्थ से बढ़कर कोई खड्ग नहीं, और सत्य से बढ़कर कोई सन्धि नहीं। —सुक़रात।

*   *

जिस भेद को तुम गुप्त रखना चहाते हो, उसे अपने मित्र से भी न कहो, क्यों कि मित्र के और कितने ही मित्र होंगे। इसके अतिरिक्त जो कभी उससे बिगाड़ हो जाये, तो उस भेद के प्रगट हो जाने का भय है। —मिल्टन।

*   *

समाज के आचार को बनाना, घर का प्रबन्ध करना, तथा कोमलता, प्रेम और सहन शीलता से जीवन की कठिन• और विषम यात्रा को सरल और सुखद बनाना स्त्री का काम है। —टामसन।

* *

जो मार्ग के भटके हुए हैं, उन्हें प्यार से समझा कर राह पर लाओ, दुर्जनों के सुधार के लिये कोमल बात कठोर लात से उपयोगी है। —दान्ते।

* *

इस बात को तुम अपने दिमाग़ से निकाल दो कि तुम स्त्रियों से अधिक गौरवशाली हो। स्त्रियाँ तुम्हारी इच्छाओं और महत्त्वा कांक्षाओं की संगिनि हैं, वे तुम्हें सुख दुख में सहायता देती है। —बेकन।

* *

जिस घर में मूर्खों का आदर नहीं होता, जहाँ अन्न संचित रहता है, और जहाँ पति पत्नी में कलह नही होता, वहाँ लक्ष्मी स्वयं निवास करती है। —चाणक्य।

* *

हठ का सामना हित से करो, तो काम बने। तलवार

की तेज़ धार मुलायम रेशम को नहीं काट सकती।

—शेखशादी।

*　　　*

लड़कियाँ सुन्दर चीजों से प्रेम करे, इस में कोई खतरा नहीं है। हाँ, वह सुन्दरता हो वास्तविक। यदि यह प्रेम केवल अपने स्वार्थ पूर्ण आनन्द के लिये ही काम में न लाया जाये, और अपने देश के सौन्दर्य को वढ़ाने की भावना भी इसके साथ रहे, तो वजाय कमज़ोरी के यह तो एक शक्ति है।　　　—श्रीमती मार्गरेट ई० कजिन्स।

*　　　*

यदि मुझे किसी छोटी लड़की को पढ़ाना पड़े, और वह मेरी ज़िम्मेदारी पर छोड़ दी जाये, तो मैं उसे बजाये पण्डिता वनाने के, उन बातों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दूंगी जिनसे उसका जीवन, सुख-शान्ति से व्यतीत हो। मैं उसे एक तेज, जिन्दा-दिल, और समझदार लड़की वनाना पसन्द करूँगी।　　　—रानी ललितकुमारी देवी (मण्डी)।

*　　　*

मेरी नम्र सम्मति मे समुचित शिक्षा ही, हमारी सारी घरेलू, सामाजिक, और राष्ट्रीय समस्या की कुंजी है।

—श्रीमती सुषमासेन।

*　　　*

किसी युवक को बहुतेरी ऐसी निश्चित बातें सिखला देना, सच्चे अर्थ में उसे शिक्षित बनाना नहीं है, कि जिन्हें सीख लेने और याद रखने में तो उसे विशेष परिश्रम नहीं पड़ता, पर न तो वह उन्हें हज्म कर सकता है, न जज्ब ही।

—कार्लाइल।

* *

जिस भाषा में लोगों की विचारधारा स्वभावतः ही बहती है, वही भाषा विचारों के लिये सर्वोत्तम है।

—फाउलर।

* *

आधुनिक संसार वही जाति सर्वाग्रणी हो सकती है, जो अपने देश वासियों को व्यवहारोपयोगी वैज्ञानिक शिक्षा देती है —जे० स्काट रसिल।

* *

भारतीय साहित्य और तत्त्व ज्ञान निःसन्देह अद्वितीय है। —विक्टर कजिन।

* *

भारत में जो विस्मय-कारक वस्तुएँ हैं, उन में सर्वोपरि वहाँ के निवासियों का जीवन है। —सर फ्रिडरिक ट्रवेस।

* *

स्वास्थ्य ही सर्वोपरि सम्पत्ति है। —इमर्सन।

*   *

देश वासियों की आरोग्यता ही देश का धन है।

—रसकिन।

*   *

हास्य रस हृदय मे आनन्द की धारा ही प्रवाहित नही करता, दिल की गाँठों को भी खोलता है।

—ऐच० ऐच० ब्राउन।

*   *

प्रसन्न रहना परम धर्म अथवा कर्त्तव्य है। हम यदि स्वयं प्रसन्न रहते हैं, तो सँसार का महान उपकार करते हैं। —स्टि वेन्सन।

*   *

हँसी वह तेल है, जिसके बिना जीवन रूपी यन्त्र बिगड़ जाता है। —स्वामी रामतीर्थ।

*   *

सँहृदयता और हास्य भाव से किसी दोष पर हम हँसें और दोषी को भी हँसायें, तो सहज में बिना मनो-मालिन्य के सुधार हो सकता है। —एडिसन।

*   *

वस्तु विशेष के अन्त रंग के समीक्षण, गवेशण, और विश्लेषण विना ही उसके वहिरगं की मृग मरीचिका पर मोहित होना कदापि श्रेयस्कर नहीं। —मैंची वेल।

* *

स्त्रियाँ कला के प्रति नहीं, कला के सम्बन्ध में गुल मचाने वाले व्यक्तियों के प्रति आकर्पित होती हैं।

—एण्टन चेखोफ।

* *

आदमी अपनी आत्मा का जितना कम चिन्तन करता है, लोगों की निन्दा- स्तुति की उसे उतनी ही अधिक चिन्ता रहती है। —टाल्सटाय।

* *

आवश्यकता है, सुधारकों की। दूसरों का नहीं, अपना सुधार करने वालों की। —स्वा०रामतीर्थ।

* *

जो अपने मित्र को दुखी देखकर दुखित नहीं होता, वह सच्चा मित्र नहीं है। असत्य के समान संसार मे पाप की ढेरी दूसरी नहीं है। लोभी को यश और भिकारी को सम्मान की आशा त्याग देनी चाहिए। —तुलसी दास।

* *

इस संसार में स्त्रियों का ही राज्य है। वे ही माताओं, पुत्रियों और पत्नियों के रूप में इस जीवन के संकुचित भाग को विस्तृत बनाती हैं। —मार्टगुमरी।

*　　　　*

लोभियों को याचक, मूर्खों को समझाने वाला, व्यभिचारिणी को पति, और चोरों को चन्द्रमा शत्रु के समान प्रतीत होता है। —चाणक्य।

*　　　　*

धर्म तथा सभ्यता के प्राचीनत्त्व के विचार से पृथ्वी की कोई भी जाति आर्य- जाति की बराबरी नही कर सकती

—हुयानसांग।

*　　　　*

जिस प्रकार लोहे से उत्पन्न हुआ कीट (जंग) उस लोहे को नष्ट कर देता है, वैसे ही अधर्म से आहार, विहार, आचरण करने वाला पाप कर्म कर्त्ता के जीवन को नष्ट भ्रष्ट कर उसे नरक में ढकेल देता है।

—महात्मा बुद्ध।

*　　　　*

पढ़ना लिखना किसी भी हालत में कभी नहीं छोड़ना

चाहिए। —वेद।

* *

प्रेम किस प्रकार किया जाता है, इसे केवल स्त्रियाँ ही जान सकती हैं। —गीदी मोपांसा।

* *

मनुष्य नर-नारायण का रूप है, यह रचना का छोटा नमूना है। —धर्मशास्त्र।

* *

स्त्रियों का मल व्यभिचार है। दाता का मल कृपणता है, और इस लोक तथा परलोक का मल पाप कर्म है। और इन मलों से भी। निकृष्ट मल अविद्या है।

—महात्मा बुद्ध

* *

सच्ची भक्ति सेवा करने में है। —श्री अरंडेल।

* *

भारतवर्ष ने हमारे लिये सब कुछ किया है। इसी की कृपा से हम इतने बड़े राज्याधिकारी हुए हैं। हमें भारत-वर्ष का सदैव धन्यवाद करना चाहिए।

—सर जार्ज बुडउड।

* *

इंसान खालिक के नमूने पर बनाया गया है।

—बाईबिल।

*   *

सोना विशेष कर, चाँदी भारत वर्ष की बहुत लाभदायक तिजारत थी, समस्त संसार में कोई भी देश अपनी आवश्यकताओं की ऐसी पूर्ति नहीं करता था, जैसी यह। उत्तम जलवायु, उपजाऊ भूमि और स्वयं निवासियों की बुद्धिमत्ता ने वह सब यहाँ जुटा दिया था, जिसकी उन्हें आवश्यकता थी।

—डा० राबर्टसन।

*   *

पुरुष को सद्गुण रूपी स्त्री धन सदा पास रखना चाहिए।

—पिल्यान्टस।

*   *

घर में शान्ति का साम्राज्य रखने की इच्छा हो तो अपनी स्त्री के किसी भी कार्य को संशयात्मक दृष्टि से न देखो।

—ल्यान्डार।

*   *

पुरुष की सच्ची और सर्वोत्तम मित्र सुशिक्षिता पत्नी है। क्यों कि वह उसी पर घर का सब कृत्य छोड़ देता है। वह पुरुष के विश्वास का दुरुपयोग कभी नहीं करती। यदि

पुरुष दुःखी रहा, तो वह उसे आनन्दित करने की चेष्टा करेगी। वह अपने वालकों को सुशिक्षा देगी और वालक सुशिक्षिता माता के स्मारक होंगे। —विशप हार्न।

*　　　　*

हम अपने आदरणीय महापुरुषों के चरित्रों का अनुसरण करके ही अपने जीवन को सार्थिक बना सकते हैं।

—लॉग फैलो।

*　　　　*

ऐ नारी, तू घर की मालिक वन के जा। और वहाँ जितने पुरुष हों उनसे रानियों के समान बात चीत कर।

——ऋग्वेद।

*　　　　*

शिक्षा द्वारा ही स्त्री के नैसर्गिक सद्गुण प्रकाशित होते हैं। —शेक्स पियर।

*　　　　*

तारे आकाश की कविता हैं, तो स्त्रियाँ पृथ्वी की। दुनिया के भाग्य का निस्तार इन्ही के हाथों में है।

—हारग्रेच।

*　　　　*

नारी वन को राजमहलों से भी सुन्दर बना देती है।

—रामायण।

*　　　　*

मै नारी का महत्त्व इस लिये नहीं मानता कि विधाता ने उसे सुन्दर बनाया है। न उससे इस लिये प्रेम करता हूँ कि वह प्रेम के लिये उत्पन्न की गयी है। परन्तु मैं उसे इस लिये पूजनीय मानता हूँ, क्यों कि मनुष्य का मनुष्यत्त्व केवल उसी से जिन्दा है।　　　　—लौविल।

*　　　　*

सद्‌गुणी स्त्री मृत्यु लोक में एक स्वर्गीय पुष्प के समान है। वह पुष्प कितना सुन्दर, कितना निर्मल, कितना निष्कलंक है?　　　　—थेकरे।

*　　　　*

अज्ञान से बढ़कर मनुष्य का और कोई शत्रु नहीं।

—स्वामी सर्वदानन्द।

*　　　　*

सारे विश्व का राज्य मिल जाये, परन्तु स्त्री न हो, तो पुरुष भिक्षुक से भी बुरा है। इससे तो वह कङ्गाल लाख गुना प्रसन्न चित्त है, जो सारा दिन परिश्रम करता है और

सन्ध्या को स्त्री का मुख देखकर सारा परिश्रम भूल जाता है। —कूपर।

*　　　　　　*

जो पराई स्त्री को पाप की दृष्टि से देखता है, वह परमात्मा के क्रोध को जगाता है, और अपने लिये नरक का रास्ता साफ करता है। —रामतीर्थ।

*　　　　　　*

किसी स्त्री का स्त्रीत्व भंग करने से पहिले मर जाना बहुत ही उत्तम कर्म है। किसी स्त्री को पाप कर्म से बचा लेना सबसे बड़ा तीर्थ है। —महात्मा गाँधी।

*　　　　　　*

मूर्ख लोग वैवाहिक आनन्द से अनभिज्ञ रहते हैं। हम जो इसके मजे उड़ा रहे हैं, अनुभव से कह सकते हैं कि यदि विवाह के सच्चे अर्थ लिये जायें, तो अच्छे आदमियों के लिये यही स्वर्ग है, बल्कि उससे भी बढ़कर है।

—काटन।

*　　　　　　*

स्त्री का पुरुष पर अवलम्बित होना रूढ़ि और अभ्यास के कारण है। यथार्थ में स्त्री यदि निश्चय कर ले, तो वह

भी पुरुष के समान स्वतन्त्र रह सकती है।

—बेथमान्ट।

*　　　　　　　　　　　　*

हमारे क़ानून की अपेक्षा स्त्री की दृष्टि में अधिक सत्ता है।　　　　　　　　　　—सेह्विले।

*　　　　　　　　　　　　*

व्रत परम विष नाशक है।　　　　—डाक्टर हैफकिन।

*　　　　　　　　　　　　*

स्त्री की पुस्तक संसार है। वह पुस्तकों से इतना नहीं सीखती, जितना संसार से सीखती है।　　　　—रूसो।

*　　　　　　　　　　　　*

स्त्री से अच्छे कार्य इस प्रकार होते हैं, जैसे आकाश से वर्षा।　　　　　　　　　　—लावल।

*　　　　　　　　　　　　*

सौंदर्य के कारण स्त्री घमण्डी हो जाती है। लज्जा से वह देवी बन जाती है। नेकी से उसकी प्रशंसा होती है।

—शेक्स पियर।

*　　　　　　　　　　　　*

भारत वर्ष का धर्म भारतवर्ष के पुत्रों से नहीं, पुत्रियों की कृपा से स्थिर है। यदि भारत-रमणियाँ अपना धर्म छोड़

देतीं, तो अब तक भारत कभी का नष्ट हो गया होता।

—स्वामी दयानन्द।

* *

वास्तविक धर्म यह है कि जिस बात को मनुष्य अपने लिये उचित नही समझता, दूसरों के साथ भी वैसी बात हरगिज़ न करे। —भीष्म पितामह।

* *

स्त्री के नयनों मे परमात्मा ने अपने दो दीपक रख दिये है, जिससे संसार के भूले भटके लोग उनके प्रकाश में अपना खोया हुआ रास्ता देख सकें। —विलिस।

* *

स्त्री पालतू कुत्ते से अधिक नमक हलाल, नाव की पतवार ज्यादा पक्की, महल के स्तम्भ से बढ़कर सुदृढ़ है। मँझधार में मौत के गोते खाने वाले आदमी को किनारा जितना प्यारा हो सकता है, स्त्री उससे भी प्यारी है। बूढ़े पिता की आँखों में छोटा पुत्र जितना सुन्दर दिखाई दे सकता है, स्त्री उससे भी सुन्दर है। काली रात के पश्चात के सुप्रभात से भी बढ़कर स्त्री ज्योतिर्मयी है। रेगिस्तान मे प्यास से विकल मनुष्य के लिये पानी जितना मीठा हो-सकता है, यह उससे भी कहीं ज्यादा मीठा है। —यगं।

एहसान न मानने वाला प्राणी पृथ्वी पर व्यर्थ का बोझ है। —कवि गिरिधरदास

* *

नारी पुरुष की अर्धाङ्गिनी है। उसकी सब से बडी मित्र है। धर्म, अर्थ, काम का मूल है। जो इसका अपमान करता है, काल उसे कष्ट कर देता है। —महाभारत।

* *

कुछ कवियों ने स्त्रियों को बेकार बदनाम किया है। उन्हों ने लिखा है कि स्त्री प्लेग है, आस्तीन का सप है, घर की आफत है, बुद्धिमानो को इस ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। दूसरी वस्तुए सौभाग्य से मिल जाती है, परन्तु स्त्री केवल ईश्वर की कृपा से मिल सकती है। जिसके पास स्त्री रत्न है, क्या वह कष्ट को कष्ट समझ सकता है? पुरुष यदि स्त्री के कथना नुसार कार्य करें, तो समस्त कार्य भली प्रकार सम्पन्न हों, और सारा संसार बुद्धिमान होजाय।

—पोप।

* *

कवियों ने स्त्री के क्रोध की ईश्वरीय कोप से तुलना की है परन्तु मुझे अपनी स्त्री के क्रोध में वह विष कभी दिखाई नहीं दिया। जब वह क्रोध में होती है, तब मेरी ओर नहीं देखती। क्योंकि उसे विश्वास है कि मेरी ओर देखते ही

उसके क्रोध की आग, प्रेम का पानी बनकर बह जायेगी

—सौदे ।

*　　　　*

विश्वास रखो कि जिस पवित्र प्रेम से पिता अपनी पुत्री को देखता है, उससे कोई दूसरा नहीं देख सकता। स्त्री के प्रेम मे कामना छिपी होती है, पुत्र के प्रेम में लोभ परन्तु जो प्रेम हमे अपनी पुत्री से होता है, वह दुनियाँ मे और किसी से नही हो सकता। —एडिसन ।

*　　　　*

स्त्री इस लिए उत्पन्न हुई है कि पुरुष की साथिन बने, प्रकृति यही चाहती है। और प्राकृतिक नियमों को पूर्ण करती हुई स्त्री ईश्वरीय शासन को पूर्ण करती है।

—शिल्लर ।

*　　　　*

प्रकृति ने स्त्री को इस लिये बनाया है कि वह अच्छी सन्तान उत्पन्न करे, मनुष्य की प्यारी बने, और तनिक २ सी बात मे प्रेम और प्यार से हमारे आनन्द में वृद्धि करे। एवं कष्टों को कम करे। घरेलू झगझटों को हल्का करके हमें इस योग्य बनादे कि हम परिश्रम कर सकें। जो व्यक्ति

स्त्रियों को इस उच्च श्रेणी से गिराना चाहते हैं, वे मूर्ख है। —फोरडायस।

*　　　　*

यदि पुरुप को समस्त संसार का राज्य मिल जाये, और स्त्री न हो, तो वह भिक-मंगा है। इसके विपरीत यदि निर्धन के पास अच्छी स्त्री है, तो वह चक्रवर्ती है।

—काऊपर।

*　　　　*

अनुभव बिना पत्नी का सच्चा मूल्य मालूम नहीं हो सकता। उत्तम गृह ही स्त्री का सच्चा सुख है।

—जियरमन।

*　　　　*

जिस प्रकार सैना का एक अति क्षुद्र सिपाही भी कभी २ एक अग्निमय बाण से दृढ़तम दुर्ग को जला देता है, उसी प्रकार एक अति दुर्बल मनुष्य भी, जब वह अपने को सत्य का निर्भय योद्धा बना लेता है, तब मूढ़ विश्वास और प्रमाद की अतीव कठिन प्राचीर को भी गिरा देता है। —मनु।

*　　　　*

स्त्री का अन्त रङ्ग, प्रेम रज्जु से बुना गया हैं।

—शेक्सपियर।

*　　　　*

केवल अवयव की रचना से स्त्री को सच्चा सौंदर्य प्राप्त नहीं होता। ह्यू‚जेस।

* *

स्त्री का सौंदर्य, उसका तारुण्य, उसका प्रसन्न मुख, उसके गुण, उसकी स्वभाव तरङ्गें, यह सब मिल कर पुरुष का प्रेम आकर्षण करने के कारण होते हैं। —गेटे।

* *

विना स्वतन्त्रता के ऐश्वर्य किस उपयोग का है।

—किंगस्ले।

* *

पुरुष से स्त्रियों का आहार दूना, लज्जा चौगुनी, साहस छः गुना, और काम अठ गुना अधिक होता है।

—चाणक्य।

* *

कर्म करो, कर्म फल की आशा मत करो। कर्म फल को ही कर्म करने का कारण मत बनाओ और निकम्मे भी मत रहो। —गीता।

* *

स्नेही और स्नेह-पात्र होना संसार का सर्व श्रेष्ठ सुख है। फेलधम।

* *

जिसके पास कुछ नहीं है, वह ग़रीब नहीं कहा जा सकता। ग़रीब तो वह है, जिसकी अभिलाषा अधिक है।

—डेनियल।

* *

भाग्य का पहिया सदा चक्कर काटा करता है। जो धुरा सबसे ऊपर होता है, नीचे अवश्य जायगा। —फेलधम।

क्रोध से अविचार होता है, अविचार से भ्रम होता है, भ्रम से बुद्धि नाश होती है। और बुद्धि नाश से सर्व नाश होता है। —गीता।

* *

यदि आप किसी स्त्री को स्वरूपवती कहते है, तो धीरे से कहिये। क्यों कि यदि शैतान सुन लेगा, तो उसको अनेकों बार प्रतिध्वनित करेगा। —डुरीवेज।

* *

शीलता रहित सुन्दरता परागहीन पुष्पवत है।

—फ्रेचसे।

* *

किस के कुल मे दोष नहीं है ? व्याधि ने किसे पीड़ित नहीं किया है ? किसको दुःख न मिला, कौन सदा सुखी ही रहा ?

—चाणक्य ।

* *

जीवन क्या है ? यह भेद भरी चाल नहीं है और स्वच्छ वायु-पान भी नहीं है। यह स्वतन्त्रता के निमित्त है।

—फेलधम ।

* *

कर्म फल की इच्छा त्याग कर जो कर्त्तव्य कर्म करता है, वही सच्चा संन्यासी अर्थात् त्यागी और सच्चा योगी है।

—गीता ।

* *

मनुष्यों से घृणा करना अपने गृह में एक चूहे से छुटकारा पाने के लिये आग लगाना है।

—जी० के० चेस्टरटन ।

* *

प्रत्येक मनुष्य को अपना काम इस प्रकार करना चाहिए जैसे उसकी सफलता मे कोई मित्र उसका हाथ बटाने वाला नहीं है।

—हेली फैक्स ।

* *

दो चीज़ों को जानना आवश्यक है, अमीरों के लिये यह जानना कि गरीब कैसे रहते हैं और ग़रीबों के लिए यह कि अमीर काम कैसे करते हैं ? —एडवर्ड आर किंसन।

*   *

एक मनुष्य किसी वस्तु पर विश्वास करके जीता, न कि बहुत सी वस्तुओं पर अविश्वास करके और उन पर बहस करके। —केरलिल।

*   *

अक़्लमन्दी के साथ वफ़ादारी रोशनी देती है न कि अन्धेरा। सेवा करने में पूजा का भाव आ जाना कमज़ोरी नहीं लाता, बल्कि वह ताक़त लाता है।

—फिलिप्स बुक्स।

*   *

सत्तर वर्ष का जवान होना, चालीस वर्ष का बूढ़ा होने से कहीं अच्छा है। —ओलिवट होल्मजा।

*   *

परमात्मा अवश्य साधारण मनुष्यों को पसन्द करता होगा, अन्यथा वह उन्हें इतनी बड़ी संख्या में उत्पन्न ही न करता। —इब्राहीम लिंकन।

*   *

वही जीवन में उन्नति कर रहा है, जिसके हृदय मे नम्रता आ रही है, जिसकी बुद्धि तीव्र हो रही है, जिसकी आत्मा शान्ति प्राप्त करती है। —रस्किन।

* *

नम्र होने का यह अर्थ नहीं है, कि तुम इतने झुक जाओ, कि अपने से भी छोटे हो जाओ। इसका तरीका है, किसी अपने से ऊँची वस्तु के सामने अपना शरीर सीधा तान कर खड़े हो जाओ, उससे तुम्हें पता लगेगा कि तुम्हारे बड़े से बड़े बड़प्पन की छोटाई क्या है?

—फिलिप्स ब्रुक्स।

* *

मनुष्य झूठ को प्रायः इस कारण काम में लाता है कि वह चमकदार होता है। —टी० लिन्च।

* *

मेहनत जीवन का जीवन है, सुस्ती बीमारी की ओर जाने वाला मार्ग। शरीर के प्रत्येक भाग का जीवन इसी में है कि वह अपने कार्य को अधिक से अधिक करे।

—सर एड्रू कल्के।

* *

विद्या एक बल है, जो हमें दूसरों की भलाई के लायक बनाता है, और इस लायक भी कि हम अपने जीवन में अपना फर्ज ठीक प्रकार से अदा कर सकें और लाभदायक हो सकें। —जेम्स लावल।

* *

जो प्रजा एक बार स्वतन्त्रता प्राप्त करने का निश्चय कर लेती है, वह उसे ज़रूर प्राप्त कर लेती है।

—गेरी वाल्डी।

* *

जब पाप बढ़ जाता है, तब पापी को न भय होता है, न आशंका। उसका बल और उसकी वीरता ईश्वर की क्रोधाग्नि में पड़कर दग्ध हो जाती है। —लक्ष्मी बाई

* *

रीति-रिवाजों का अत्याचार सर्वत्र फैला है, और यही मानवीय उन्नति में बाधक है, क्यों कि यह सदा उच्च उद्देश्यों के विपरीत होता है, जो प्रचलित रीति से उन्नति शाली सुधार है। —जान स्टुअर्ट मिल।

* *

दान उदारता और अतिथि सत्कार की शिक्षा मैंने अपनी माता से प्राप्त की है। उसका जीवन दान, और अतिथि

सत्कार के सम्बन्ध में, बड़ा प्रभावशाली था। उनसे मुझे बहुत सी शिक्षायें प्राप्त हुई थी। —ला० लाजपतराय।

* *

राजगद्दी एक ऐसा सम्मान है, जहाँ पर धर्म राज को अपना दूत सदा रखना चाहिए। —महात्मा गान्धी।

* *

मनुष्य की महानता दूसरों के सुख पर निर्भर है।

—नेपोलियन।

* *

प्रकृति के राज्य में एक मनुष्य घुसता है, परन्तु वह असली सुख तभी पा सकता है, जब कि वह उस स्त्री के साथ हो, जिसको वह संसार में सबसे अधिक प्रेम करता है

—आर० एल० स्टीवन सन।

* *

मृत्यु दबे पाँव आती है, जन्म कोलाहल करता हुआ।

—लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।

* *

प्रकृति बहुत कमजोर है, परन्तु केवल उसके लिये जो प्रकृति को स्थिरता से कमजोर समझता है।

—नेपोलियन।

कुछ लोग ऐसे हैं, जो राजा और रानियों से बात-चीत कर सकते हैं, परन्तु वह तो अपने पड़ौसी की स्त्री से बात करना अधिक पसन्द करते हैं। —रस्किन।

* *

दुःख तो इस बात का होता है कि आज की सफल पत्नी कल होने पर बिल्कुल असफल सास बन जाती है। —बर्ट्रंड रसेल।

* *

सन्तुष्ट रहना आशा वाद का दूसरा नाम है। —वोवेर्न गूड्च।

* *

एक शिल्पकार किताब पढ़ना एक रूखा काम समझता है, एक साधारण मनुष्य पढ़ाई को पसन्द करता है। और एक अकलमन्द आदमी पढ़ाई करता है, और उस का फायदा उठाता है। —फ्रॉलिस बेकन।

* *

व्यक्तिगत स्वतंत्रता का नाम सामाजिक ग़दर है। —ए० जी० गार्डिनर।

* *

नम्रता क्या है ? सिर्फ भावुकता के आराम करने का समय। —जौ बर्ट।

*　　　　*

स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पहिले क़ानूनों को तोड़ना पड़ता है और स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पश्चात उन्हें नये ढंग से बनाना। —रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

*　　　　*

विदेशी राज्य कितना ही दयालु क्यों न हो, वह हमें बिना दवाये न छोड़ेगा। उसका उद्देश्य कितना ही अच्छा क्यों न हो, किन्तु उससे हमारी भलाई नहीं हो सकती।

—अरविंद घोष।

*　　　　*

मैं स्वाधीनता को धर्म समझता हूँ, राजनीति को नहीं।

—एण्डरूज।

*　　　　*

प्रत्येक मनुष्य वैसा ही है, जैसा ईश्वर ने बनाया, और कभी बहुत बुरा भी दिखाई देता है। —सरवेन्टेस।

*　　　　*

अपने बालको को अपने तरीके पर शिक्षित न कर,

इस लिये कि वे दूसरे जमाने के लिए पैदा हुए हैं।

—लुकमान।

* *

हम शीशे में अपने अक्स को पकड़ सकते हैं, मगर स्त्री के दिल की हालत को मालूम नही कर सकते।

—तुलसीदास।

* *

एक दगाबाज़ से उतना ही परहेज करो, जितना एक साँप से। —हेली।

* *

पैदा करो, जो कुछ ईमानदारी से कर सकते हो, बचाओ, जो कुछ दूर बीनी से कर सकते हो, दान करो, जो कुछ प्रसन्नता से कर सकते हो। —जान वेलज़ली।

* *

लज्जा मनुष्य-समाज का स्वाभाविक गुण है, गुण ही नहीं, बल्कि मानव जाति के लिये उत्तम भूषण है। किन्तु उचित सीमा में ही वह गुण कहा जा सकता है। —कूक।

* *

अपराध से घृणा करो न कि अपराधी से।

—महात्मा गान्धी।

समस्त आदर्श बन्धनों को इस दृष्टि से देखना चाहिए कि आया वह हमारे इच्छित आदर्श की प्राप्ति की ओर ढेलते हैं कि नहीं। —बर्ट्रेंड रसेल।

* *

मैं अपनी किताबों को पढ़ने के लिये सब को राय देता हूँ, क्यों कि वह मेरे लिये पढ़ने का सबसे अच्छा सामान है, जब कि मैं कुछ लिख रहा हूँ। —जेम्स स्टीफन्स।

* *

मैं दुबारा जन्म नहीं लेना चाहता, परन्तु यदि मुझे जन्म लेना ही पड़े, तो मेरी इच्छा है कि मुझे अछूत का जन्म मिले, जिससे मैं उनके रंज-गम, दुःख-ज़िल्लत में शरीक हो सकूं, जो उनके साथ रवा रक्खी जाती है।

—महात्मा गान्धी।

*

जीवन का उद्देश तेजस्वी तथा सत्य आदर्श के लिए प्राण धारण करना है। —मेकस्विनी।

* *

मिट्टी के बरतन से भी रत्न उठाने में हिच किचाओ मत, सब से निकृष्ट भी कुछ अच्छी बात कह सक्ते है।

—हर्बर्ट।

जिनके भाग्य में भगवान नाश लिखते हैं, उनका दिमाग़ पहिले ही बिगाड़ देते हैं। —डिरायडन।

*　　　　*

मनुष्य उसी को कहना चाहिए कि जो मनन शील हो कर स्वात्मवत् अन्यों के दुख-सुख और हानि-लाभ को समझे अन्याय कारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। —स्वामी दयानन्द।

*　　　　*

यह विकास हीन शिक्षा क्रम बिना नींव की इमारत है। अथवा अंग्रेजी कहावत का अनुवाद किया जाये, तो चूने से पोती कब्र के जैसी है, जिसके भीतर मुर्दा रखा हुआ है, और जिसे या तो कीड़े मकोड़े खागये हैं या खा रहे हैं।

—महात्मा गांधी।

*　　　　*

प्रेम इतिहास की सच्ची चाबी है। —पौल सेवेटितर।

*　　　　*

शक करना धीरे २ ख़ुदकशी करना है।

—एमरसन।

*　　　　*

यदि किसी बात को तीन आदमी गुप्त रखना चाहते हैं,

तो उनमें से दो का मर जाना बेहतर है।

—फ्रैंकलिन।

*　　　　　　　　*

धनी वही है, जिसे किसी का कुछ देना नहीं है।

—एच० सी० बोहन।

*　　　　　　　　*

शक्की लोग मर जावेंगे, परन्तु शक कभी नहीं मरेगा।

— मोलियर।

*　　　　　　　　*

ऋण से बढ़कर कोई गरीबी नहीं।　—थामस फुलर।

*　　　　　　　　*

चाहे जितने वर्ष जीवित रहो, परन्तु याद रखो, कि पहिला २० वर्ष का समय जीवन का एक बहुमूल्य भाग है।

—स्वा० विवेकानन्द।

*　　　　　　　　*

जितने महान व्यक्ति हुए हैं, वह डींग मारने वाले मूर्ख नहीं थे। उन्होंने जीवन के भयानक हिस्से का पहिले से ही अन्दाज। लगा लिया था, और फिर उन्होंने अपने मे पुरुषत्व उतपन्न करके उसका मुकाबला किया।　—इमर्सन।

यदि तू विरोध से घबराता है, तो सोच तेरे हृदय में कोई बुराई तो नहीं है। —हरि भाऊ उपाध्याय।

*   *

ऋण ग्रस्त लोग झूंटे होते हैं। —जार्ज हरबर्ट।

*   *

अपनी बात सुनाने के लिये किसी का हाथ न पकड़ो, क्यों कि वह यदि तुम्हारी बात सुनना नहीं चाहता तो तुम्हें उसे पकड़ने की अपेक्षा अपनी जीभ पकड़नी चाहिए।

—चेस्डर फील्ड।

*   *

जो आदमी छोटा बनकर रहना जानता है, वह बड़ा भी बन सकता है। —इमर्सन।

*   *

हिंसा बुरी है, पर गुलामी उससे भी बुरी है।

—महात्मा गान्धी।

*   *

मनुष्य अधिक कमाने से धनवान नहीं बनता, परन्तु कमाई में से बचाने से धनवान बनता है।

—लाफोन्टेन।

क्रूर और दुःखदाई व्यक्ति कभी सच्चे आनन्द को प्रा-प्त नहीं कर सकता। —अफलातून।

* *

मनुष्य के चरित्र की जाँच, उसके साथियों के चरित्र से होती है। जो लोग भला बनना चाहते हों, उन्हें अच्छी संगति में रहना चाहिए। —गणेश शङ्कर विद्यार्थी।

* *

दरिद्र, अज्ञानी और असमर्थ को ही अपना देवता मानो इन्हीं की सेवा में परम धर्म जानो। —स्वा० विवेकानन्द।

* *

अस्पृश्यकता का आधार जन्म और जाति को न मानकर व्यक्ति के वाह्य आचरण को मानना चाहिए।

—डाक्टर भगवान दास।

* *

यदि मनुष्य, जीवन को उच्च और विजयी बनाना चाहता है, तो अपने ऊपर आने वाली आपदाओं, कठिनाईयो और अपमानों से जरा भी नहीं डरना चाहिए, न निराश होना चाहिए। —गणेश शङ्कर विद्यार्थी।

* *

विश्वास महान होता है, वह पहाड़ों को भी हटा सकता है। यह हमारी नितान्त आवश्यक वस्तु है।

—टी० एल० वास्वानी।

*　　　　　　　　　　*

सारा धन भगवान का है, और आज जिन लोगों के हाथ में है, वे केवल उसके ट्रस्टी हैं, मालिक नहीं। आज यह उनके पास है, कल दूसरे के पास हो सक्ता है। जब तक यह इनके पास है, तब तक इस ट्रस्ट को यह लोग कैसे निबाहते है, किस भाव से निबाहते हैं, किस सेवा में उसका उपयोग करते हैं, और क्या उपयोग करते है, इसी बात पर सारी बात निर्भर है। —योगी अरविन्द।

*　　　　　　　　　　*

धर्म-शास्त्र किसी एक की बपौती नहीं, भगवान का नाम लेने, दर्शन करने, कुओं का उपयोग करने और विद्या पढ़ने का सब को हक है। मैं तो चाहता हूँ कि प्रत्येक अछूत सन्तान का संस्कार वही हो, जो और बालकों का होता है।

—महामनी मालवीय जी।

*　　　　　　　　　　*

निकाला चाहता है, काम क्या तानों से तू ग़ालिब।
तेरे बे मेहर कहने से वह तुझपर मेहरबाँ क्यों हो ?

—ग़ालिब।

धरती उन लोगों को भी आश्रय देती है, जो उसे खोदते हैं। इसी प्रकार तुम भी उन लोगों की बातें सहन करो, जो तुम्हें सताते हैं, क्यों कि बडप्पन इसी में है।

—ऋषि तिरवल्लुवर।

*   *

आकाश से बातें उज्जवल संगमर्मर के मन्दिर या पत्थर की मूर्तियाँ अब तुम्हारे हृदय की जलन नहीं बुझा सकतीं। उसके लिये देश भूके प्यासे नारायणों और दुबले-पतले विष्णुओं की पूजा करनी होगी।

—स्वामी रामतीर्थ।

*   *

ताकत ज़मानत है, और निश्चय ही हमारा रक्षक।

—सुभाषचन्द्र बोस।

*   *

बड़े आदमियों के दोष भी गुण माने जाते हैं।

—शैकरले।

*   *

बड़ों को छोटों की और छोटों को बड़ों की आवश्यक्ता रहती है।

—थामस फुलर।

*   *

जो कम पागल होते है, वही मनुष्य संसार मे विद्वान् कहलाते हैं। —प्रो० जेसुकिक।

*　　　　*

अपने विचारों को निर्भय होकर प्रघट करो। —मेजिनी।

*　　　　*

अपनी आवश्यकतायें साहस पूर्वक लोगों को बतलाओ परन्तु लोगों पर क्रोध मत करो और न उन्हें भय दिखलाओ —मेजिनी।

*　　　　*

प्रत्येक मनुष्य के अधिकार बराबर है। न कोई बड़ा है न कोई छोटा। किसी समाज में एकत्र रहने के कारण कोई नयाकारण नया अधिकार प्राप्त नहीं होता। समाज में शक्ति अधिक है न कि अधिकार। —मेजिनीं।

*　　　　*

तुम बदला लेने के विचारों को अपने दिल से निकाल डालो, जिन लोगों ने तुम्हारे साथ अन्याय किया है उनकी ओर से भी अपना हृदय शुद्ध रखो। —मेजिनी।

जो मनुष्य अपनी भूलों और दुर्बलताओं का प्रकाश में आना सहन नहीं कर सकता, वह सत्य के पथका पथिक बनने के सर्वथा अयोग्य है। —जे० एलेन

* *

हजारों हानियां भी मुझे मेरे भाइयों से विमुख नहीं कर सकतीं। —सम्राट हुमायूं

* *

सब से उत्तम विजय प्रेम की है, जो सदैव को विजितों का हृदय बांध देती है। —सम्राट अशोक महान

* *

न पा सकते जिसे पाबन्द, रह कर क़ैदे हस्ती में।
सो हमने बे निशां होकर, तुझे ऐ बे निशाँ पाया॥

—हसरत मोहानी

* *

मूर्ख मनुष्य अपने पतन और अपने पापों को दूसरे के मत्थे मढ़ा करता है। —जे० एलेन

* *

अहित किये हूँ हित करे, सज्जन परम सधीर।
सोखे हूँ शीतल करै, जैसे नीर समीर॥

—वृन्द

*   *

मै अपने दोस्त, उनकी शकल देख कर चुनता हूँ, जान-पहचान उनसे बढ़ाता हूँ जो कि अच्छे चरित्र वाले होते हैं और दुश्मन उसे चुनता हूँ जो कि अच्छे दिमाग़ वाला होता है। —आस्कर वाइल्ड

*   *

"मनुष्य पाप करता है। सम्पूर्णतया पाप मुक्त तो बिरला ही होता है, फिर भी दुख इस बात का है कि इन सब पापों की सफ़ाई मनुष्य ने तैयार कर रखी है। इस झूठी सफाई का नाम भ्रम में पड़ना है और पाप को पाप समझना छोड़ देना है। बहुधा इस भ्रम के कारण पाप को बहुत सहज और स्वभाविक समझने लगता है—यही नहीं, कभी-कभी तो पाप को धर्म भी समझ बैठता है।"

—महात्मा टालस्टाय

*   *

"प्रेम पाप नहीं है, वह फूलों में समाई हुई सुगन्धि

के समान एक टिकाऊ प्राकृतिक शक्ति है। कभी कभी वह आप से उमड़ पडती है। नहीं तो हम उसे विद्युत शक्ति की तरह पैदा भी करसकते हैं। प्रेम भी ईश्वर का स्वरूप है उसका दर्शन हम किसी भी मन्दिर मे कर सकते हैं। लेकिन यह शर्त जरूर है कि हम मे भक्ति-भावना और श्रद्धा-भाव अवश्य हो। जहाँ विश्वास होता है वहाँ (उस मन्दिर में) ईश्वर का निवास है। व्रत रख कर उपासना करोगे, तो प्रेम परा-शक्ति को उस मन्दिर मे पावोगे, नहीं तो मन्दिर में पत्थर को ही देखोगे। यह पत्थर का दोष नही, तुम्हारा ही दोष है।"

—राजगोपालाचारी

* *

आजकल लोग विज्ञान को बड़े चाव से सीखते हैं, पर उनमें से ऐसे कितने है जो सत्य की खोज और मानव हित के लिये ऐसा करते हैं? वह विज्ञान जिसका उद्देश्य स्वार्थ-साधन या कीर्ति लाभ है, हमारा कल्याण कभी नहीं कर सकता। ऐसा ज्ञान हमें परमात्मा से अलग करने वाला है न कि उसके पास ले जाने वाला। लोक-हित से रहित ज्ञान मनुष्य के जीवन के लिये लाभ नहीं, वरना एक तरह

का अनर्थ है।" —साधु वास्वानी

*　　　　　　*

जिन कार्यों के लिये स्पष्टीकरण की आवश्यकता पड़े उन्हें बिना किये छोड़ देना ही सब से अच्छा है। —ऐनन

*　　　　　　*

प्रेम निस्सन्देह इस पृथ्वी पर स्वर्ग है। स्वर्ग भी प्रेम के बिना स्वर्ग नहीं हो सकता। —विलियम पेन

*　　　　　　*

ग़लती सब मनुष्यों से होती है। परन्तु बुद्धिमान और प्रसन्न मनुष्य वह है, जो अपनी ग़लतियों के लिये ज़िद नहीं करता। —सोफोक्लेस

*　　　　　　*

अनुशासन का उद्देश्य स्वशासित व्यक्तियों को पैदा करना होना चाहिये, न कि शासित किये जाने वाले व्यक्तियों को। —हरबर्ट स्पेन्सर

*　　　　　　*

अपने जीवन से प्रेम करो, वह दीन है। इसे अपनाओ। इससे परहेज़ मत करो और इसे बुरा मत बताओ

छिद्रान्वेषी तो स्वर्ग से भी दोष निकाल देंगे। —थोरू

*   *

दो प्रकार की स्वतन्त्रतायें हैं—एक झूठी, जिसके अनुसार मनुष्य जो चाहे करे और एक सच्ची जिसके अनुसार मनुष्य वही कर सकता है जो उसे करना चाहिये।

—चार्ल्स किंग्सले

*   *

धनवान बनने की इच्छा मत करो, सुखी बनने की इच्छा रक्खो। धन थैलियों मे रहता है और सुख सन्तोष में, जिसे धन प्राप्त नहीं करा सकता। —विलियम पेन

*   *

उदास तथा दुखी रहने से स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ता है। मन तथा मस्तिष्क दोनों को हानि पहुंचती है और उससे कोई लाभ नहीं होता। —साहब जी

*   *

निर्मल प्रेम का उदय, मनुष्य के हृदय में तभी होता है जब संसारी वासनाएं बीच में आकर विघ्न उपस्थित नहीं करती, अतएव संसारी वासनाओं को शनैः शनैः कम करने का उद्योग निरन्तर करते रहना चाहिये। —साहब जी

*   *

जिस मनुष्य के हृदय में प्रेम का प्रकाश नहीं है वह कितनी ही बातें क्यूं न बनावे प्रेमी कहलाने का अधिकारी नही है। —साहब जी

* *

मनुष्य को दो दुर्लभ पदार्थ प्रदान किये गये हैं, जिनसे अन्य जीव वंचित और जिनके कारण मनुष्य सब जीवों मे श्रेष्ट है। उन दो पदार्थों में एक तो है बुद्धि और दूसरी है अगुलियों का अंगूठा। —साहब जी

* *

जगत से बिलकुल प्रथक होना अथवा उसी में मग्न हो जाना दोनों बातें बुरी है। जब तुम कभी पाप करते हो तब अन्दर से कोई तुम्हारी निन्दा करता है। अपने पापोंको दूसरों से चाहे छिपा रक्खो परन्तु अपने हृदय से तुम नहीं छिपा सकते। —मेजिनी

* *

जो प्रेम तुम अपने माता-पिता पर करोगे वही तुमको तुम्हारे बालकों से मिलने वाले प्रेम की जमानत है, ऐसा समझो। अर्थात् जैसी प्रीत तुम अपने माता-पिता पर करोगे वैसी ही प्रीति तुम्हारे बालक तुम पर करेंगे। —मेजिनी

* *

मनुष्य का कर्म से बच जाना आसान है, और मनसा को भी रोक लेना असम्भव नहीं है, परन्तु जब तक आशा का नाश नहीं होता तब तक मनुष्य के दुखों का नाश नहीं होता।
—साहब जी

*　　　　*

मनुष्य योनि के अतिरिक्त अन्य योनियों में केवल विषयों का भोग हो सकता है, आत्मिक उन्नति नहीं हो सकती, अतएव मनुष्य जन्म पाकर जो अपना जीवन आत्मिक उन्नति में नहीं लगाता, वह हतभागी है।
—साहब जी

*　　　　*

सम्पत्ति को अधिकार की दृष्टि से नहीं वरन् कर्तव्य की दृष्टि से प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये।
—मेजिनी

*　　　　*

अच्छे आदमी बुरी अवस्था में भी भलाई कर सकते हैं, इसी प्रकार बुरे आदमी अच्छी अवस्था में भी बुराई कर सकते हैं।
—मेजिनी

*　　　　*

पस्याति सद्ग्रन्थ विमर्श भाग्य,
किन्तस्य शुठेके श्च पला विनोदैः ।

जिसके भाग्य में अच्छे सद्-ग्रन्थों का पठन व मनन करना हो उसको चचंला लक्ष्मी के शुष्क विनोद किस तुलना में हैं ?
—नीति

*   *

मेरा यह विश्वास है कि जिसको अच्छी पुस्तकों के पढ़ने का शौक है वह चाहे जहां एकान्त-वास सहलाई से निकल सकता है ।
—मा०, गांधी

*   *

महलों से व अटूट भन्डार से जो सन्तोष नहीं मिलता वह सन्तोष उत्तम पुस्तकों से प्राप्त होगा ।
—संसार का धन कुबेर कार्नेगी

*   *

मैं नर्क में भी उत्तम पुस्तकों का स्वागत करूंगा क्यूं कि इनमें वह शक्ति है कि जहॉ यह होंगी वहां आपही स्वर्ग बन जायगा ।
—लोकमान्य तिलक

*   *

खराब पुस्तकों का पढ़ना जहर पीने के समान है ।
—महात्मा टाल्सटाय

*   *

* समाप्त *